तौहीद और हम

तालीफ़ :– बशीर अहमद लोधी

तर्जुमा :– मोहम्मद शिराज़ बिन आलम (कैफ़ी)

प्रूफ़ रीडिंग :– इरफ़ान अली

अल्लाह तआला के बारे में बातिल (गलत) मज़हबों का ख़याल

हिन्दू और अल्लाह का तसव्वुर : यह कहना गलत है कि हिन्दू अल्लाह के मुन्किर हैं। हिन्दू सिर्फ़ एक अल्लाह को मानते हैं। यह अलग बात है कि वह अल्लाह को किसी दुसरे नाम से याद करते हैं, जैसे उनकी मशहूर किताब भगवत गीता" में मुख्य भगवान को विष्णु" का नाम दिया गया है। उसको सारी कमियों से पाक, हर चीज़ का पैदा करने वाला, देखभाल करने वाला और हर चीज़ को ख़तम करने वाला बताया गया है। इसी को कमज़ोरो को पनाह देने वाला और हक़ को ढूँढने वालो की मंजिल बताया गया है॥ उनका यह अक़ीदा है कि विष्णु अवतारों की सूरत में ज़मीन पर आते हैं। उनके मुताबिक़ नरसिंह उसका चौथा, रामचंद्र जी सातवाँ और कृष्ण महाराज आठवां अवतार हैं। उनके मुताबिक़ विष्णु अलग अलग वक़्तों पर अलग अलग शक्लों में आते हैं। बिल्कुल इसी तरह जिस तरह आज मुसलमान भी कहने लगे हैं!

वही जो मुस्तवा, अर्श था ख़ुदा होकर

उतर पड़ा मदीने में मुस्तफ़ा होकर!

मट्टी दा बुत बना के आपे विच बह गया

जग्गा नूं बनावन वाला केड़ी खेड़्डे बह गया (पंजाबी)

हिन्दू अकीदों के मुताबिक़ उन बुजुर्गों की इबादत दरअसल विष्णु" की ही इबादत है। उस तक पहुँचने के लिए इन देवताओं को ख़ुश करना ज़रूरी है, वरना कहाँ अल्लाह और कहाँ यह मिट्टी से बना इंसान, ग़ौर फ़रमाइए, कि आज के मुसलमान का अक़ीदा इससे कुछ अलग है या यही है?

दुसरे विश्व युद्ध ने सारी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया था, मुझे भी फ़ौज की नौकरी के सिलसिले में बर्मा में घूमने का इत्तेफ़ाक़ हुआ, वहां लोगों का मज़हब बुध था। उनके घरों और इबादतख़ानों में जाने का अक्सर इत्तेफ़ाक़ हुआ, बुध धर्म के मानने वालों का भी अक़ीदा हिन्दू से मिलता जुलता है, नामों का फ़र्क है।

बुतों का पुजारी दुनियाँ में कोई नहीं

यह कहना गलत है कि बुतपरस्त लोग बुतों की पूजा करते हैं। वह लोग भी पत्थर को पत्थर ही जानते हैं। अगर पत्थरों की ही पूजा करना होती तो वह पहाड़ो की पूजा करते, जहाँ बड़े बड़े पत्थर होते हैं और वह सड़कों पर पत्थर इस्तेमाल करके पत्थर की बेहुरमती कभी न करते, मगर पत्थर का ताल्लुक़ जब किसी एहतराम के लायक़ शख़्स की तरफ़ करते हैं तो फिर उस पत्थर का एहतराम करना और उसकी पूजा करना वह फ़र्ज़ समझते हैं। वह इन बुज़ुर्गों की पूजा करते हैं, जिनसे वह पत्थर या लकड़ी के बुत का

ताल्लुक़ जोड़ते हैं, उनका मक़सद बुत नहीं बल्कि बुज़ुर्ग की ज़ात होती है, बुत का पुजारी दुनिया में कोई नहीं है, बुज़ुर्ग की पूजा करना मक़सद होता है।

एक इन्क़ेलाब

जापान के शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर दो एटम बम बड़ा लड़का और छोटा लड़का नामी गिराए गए। जापान ख़त्म हो गया, जापान की हार के साथ ही जर्मनी फ़ौजें भी बिखर गयीं और दूसरा विश्व युद्ध ख़त्म हो गया, फिर पाकिस्तान बन गया। अल्हम्दुल्लिल्लाह हिन्दू दोस्त भारत चले गए, मुसलमान दोस्त मिलें। वह वक़्त भी अजीब था कि इस्लाम का जज़्बा सब में शिद्दत से पाया जाता था। सबके सब रोज़ा, नमाज़ के पाबंद थे, सुबह और दोपहर को क़ुरआन की तिलावत रोज़ाना करते थे। मेरे कानो ने क़ुरआन की तिलावत निहायत ही सुरीली आवाज़ में पहली बार 14 अगस्त 1947 ईस्वी को रात बारह बजे रेडियो पर सुनी, "सोहबते सालेह तरा, सालेह कुंद" की तरह मुझे भी ज़िन्दगी में पहली बार क़ुरआन पाक पढ़ने का शौक़ हुआ। मेरे बाप की दुआओं ने अपना असर दिखाया और मैं अमल के ऐतबार से मुसलमान हो गया। मंदिर के बजाये मस्जिद जाने लगा, मैं भी धीरे धीरे क़ुरआन पाक पढ़ता था, मगर मेरे दिल में एक बात अच्छी तरह बैठ चुकी थी कि बिना तर्जुमे के क़ुरआन पढ़ना दूसरी ज़िन्दगी में तो फ़ायदामंद होगा, मगर इस ज़िन्दगी में हरगिज़ फ़ायदामंद नहीं। इसलिए मैं क़ुरआन के अरबी अल्फाज़ के साथ उर्दू तर्जुमे पर ज़्यादा ग़ौर करता था। मैंने एक छोटा सा क़ुरआन पाक ख़रीदा, जो ताज कंपनी से छपा था और नीचे लफ़्ज़ी तर्जुमा लिखा हुआ था। वह आज भी मेरे पास मौजूद है, मैं एक रोज़ में कुछ ही आयतें पढ़ता था और उनका तर्जुमा याद रखता, आयतों को मिलाकर उनसे नतीजे निकालता रहता था। इस तरीक़े की वजह से मेरा इख़्तिलाफ़ भी कुछ दोस्तों से हुआ। मैंने क़ुरआन पाक में पढ़ा था:

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

यह बरकत वाली किताब हमने तुम्हारी तरफ़ इसलिए नाज़िल की है कि इस पर अक़ल वाले ग़ौर करें। (साद 38/ 29)

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

"क्या यह लोग क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते? क्या इनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं ?"(मुहम्मद 47/24)

मैंने सोचा कि

क्यूँ ज़ियाँकार बनूँ सूद फ़रामोश रहूँ?

फ़िक्र फ़र्दा न करूं, महवे ग़म दोष रहूँ! (शिकवा इक़बाल)

मुसलमानों से इख़्तिलाफ़

मुसलमानों के साथ की वजह से कुछ उल्मा ए किराम को सुनने का भी मौक़ा मिला। मैंने मंदिर में तालीम पाई थी और बुत परस्तों में ज़िन्दगी का एक हिस्सा गुज़ार चुका था, इसलिए मैंने उल्मा ए किराम की यह बात मानने से इनकार कर दिया कि मक्का के काफ़िर और मुशरिक अल्लाह के मुन्किर थे और पत्थरों के बुतों को ख़ुदा माना करते थे। यह सवाल दिमाग में रखते हुए मैंने क़ुरआन ए करीम से इसका जवाब ढूँढने की कोशिश की, मैंने क़ुरआन से पढ़ लिया कि मक्का के क़ुरैश भी सिर्फ़ एक अल्लाह को ही अल्लाह, ख़ालिक़, मालिक, ज़रूरतों को पूरा करने वाला और मुश्किल कुशा (मुश्किल से बचाने वाला) मानते थे। आपको इस बात से हैरत ज़रूर होगी, मगर क़ुरआन पाक से मेरे इस दावे की तसदीक़ होती है।

कुफ्फ़ारे मक्का और अल्लाह का तसव्वुर

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताये हुए तरीक़े पर कुफ्फ़ारे मक्का ने चलने से इनकार कर दिया, अल्लाह ने हुक्म फ़रमाया कि उनसे अल्लाह के बारे में कुछ सवाल पूछों, जिस जवाब की उनसे उम्मीद थी वह भी नक़ल फ़रमा दिया। फ़रमाया :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا
بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

अगर आप उनसे पूछेंगे कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया और सूरज और चाँद को किसने काम पर लगाया तो यह फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह ने, तो यह कहाँ घूम रहे हैं? अल्लाह ही तो वह ज़ात है जो अपने बन्दों में से जिसे चाहे रिज़्क़ बढ़ा कर देता है और जिसे चाहे कम देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है अगर आप उनसे पूछेंगे कि आसमान से पानी कौन उतारता है, उसके साथ मुर्दा ज़मीन को कौन ज़िन्दगी बख़्शता है तो फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह। आप उनको फ़रमा दें कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, मगर उनमें ज़्यादातर लोग अक़ल से काम नहीं लेते।'(अल अनकबूत 29/61-63)

ग़ौर फ़रमाइए मैं भी अक्सर सोचता था कि अल्लाह को सब कुछ मानते भी हैं, जिसकी गवाही ख़ुद अल्लाह पाक दे रहे हैं तो फिर वह बे अक़ल और गुमराह क्यूँ क़रार पाए थे फिर मैंने और भी पढ़ा।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾

फ़रमाइए कि तुम को आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ कौन पहुंचाता है? सुनने और देखने का मालिक कौन है? जिंदा से मुर्दा और मुर्दा से जिंदा को कौन निकालता है? वह कौन है जो कामों की तदबीर करता है? तो यह फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह ही है। इनको फ़रमाइए क्या तुम डरते नहीं हो?"(युनुस 10/31)

मैं हैरान इस बात पर था कि इस तरह अल्लाह को मानने में क्या कमी है। हम भी इस तरह मानते हैं, मगर इस तरह मानने वालों को न डरने वाले फ़रमाया गया है, आख़िर क्यूँ?

फिर इरशाद हुआ:

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

और अगर आप उनसे सवाल पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो कहेंगे कि अल्लाह ने , फ़रमा दीजिये कि तमाम तारीफों के लायक़ तो अल्लाह ही की ज़ात है, मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। (लुक़मान 31/25)

मैं इन आयतों को दिल में जुस्तुजू के जज़्बे से दबाये हुए इकठ्ठा करता चला गया। हैरान था कि आख़िर कमी क्या है कि हमारी तरह अल्लाह को मानने के बावजूद न जानने वाले क़रार दिया गया है, फिर मैंने इरशादे ख़ुदावन्दी पढ़ा:

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

उनको फ़रमाइए कि अगर तुमको कुछ इल्म है तो बताओ कि ज़मीन और जो कुछ इसमें है किसके लिए है, तो यह फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह ही के लिए है। इनको फ़रमाइए क्या तुम कुछ नसीहत नहीं लेते हो? उनको फ़रमाइए कि सात आसमानों और अर्शे अज़ीम का परवरदिगार कौन है? तो फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह, उनको फ़रमाइए कि क्या तुम डरते नहीं हो, उनसे पूछिए कि अगर तुमको कुछ इल्म है तो बताओ कि किसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है? वह पनाह देता है, मगर उसके मुकाबले कोई पनाह नहीं दे सकता यह फ़ौरन कहेंगे कि अल्लाह ही है। इनको फ़रमाइए कि तुम पर जादू कहाँ से चल गया है?" (अल मोमिन 23/84-89)

जब मैंने यह आयतें पढ़ीं तो दूसरी बातों के अलावा मुझे मुसलमानों के इस शेर की सेहत पर सख़्त इख़्तिलाफ़ हुआ:

ख़ुदा का पकड़ा छुड़ाए मुहम्मद

मुहम्मद का पकड़ा छुड़ा कोई नहीं सकता

आख़िर क्यूँ और किस तरह? जब कि मुक़ाबिल कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। अगर आप ग़ौर करियें तो इन आयतों को पढ़ने से यह बात साफ़ साफ़ समझ में आती है कि कुफ्फ़ारे मक्का आसमानों व ज़मीन का ख़ालिक़, सूरज और चाँद को काम पर लगाने वाला, रिज़्क़ देने के अलावा उसमें कमी व ज़्यादती करने वाला, हर चीज़ का पूरा इल्म रखने वाला, आसमानों से पानी नाज़िल फ़रमाने वाला, उससे मुर्दा ज़मीन को जिंदा करने वाला, सुनने और देखने की ताक़त का, मुर्दा चीज़ से जिंदा और जिंदा से मुर्दा

का ख़ालिक़, इस कायनात में तदबीर करने वाला, ज़मीन और उसके अन्दर की चीज़ का मालिक सात आसमानों और अर्शे अज़ीम का परवरदिगार जिसके हाथ में हर चीज़ है, हर किसी को पनाह देने वाला और वह जिससे कोई भी किसी को पनाह नहीं दे सकता, अल्लाह ही को मानते थे। इसी तरह जिस तरह आज मैं और आप मानते हैं, बल्कि मैं क़ुरान में यह देख कर हैरान हो गया था कि कुफ्फ़ारे मक्का दुआएं भी उसी एक अल्लाह से मांगते थे, जिससे मैं और आप मांगते हैं, लीजिये आप भी पढ़ें :

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾

और जब उन्होंने कहा कि ऐ हमारे अल्लाह अगर तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा,या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ले आ। (अल अनफ़ाल 8/32)

यह उस वक़्त की बात है, जब कुफ्फ़ारे मक्का हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबलीग़ के बढ़ते हुए असर को रोक न सके तो थक हार कर अबू जहल ने ख़ाना काबा का तवाफ़ करते हुए इसके ग़िलाफ़ को और कुछ के मुताबिक़ कुंडा पकड़ कर यह दुआ मांगी थी, मगर आप इस बहस में पड़ें कि यह कौन था और उसने किस वक़्त किस हालत में दुआ मांगी थी। आयत साफ़ बता रही है कि कोई क़ुरान का इनकार करने वाला ही था, फिर मैंने पढ़ा:

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमारा हिस्सा हिसाब के दिन से पहले हमको दे डाल। (साद 38/16)

मैं जैसे जैसे यह आयतें पढ़ता गया, मेरी हैरत बढ़ती गई। यह बात भी अजब है कि एक क़ौम हर चीज़ का मालिक व ख़ालिक़ भी हमारी तरह अल्लाह ही को माने और हर मुश्किल वक़्त पर दुआ के लिए हाथ भी उसी के सामने उठाए, जिसके सामने हम करते हैं। फिर भी हमे तो इतना दावा मुसलमानी हो और वह काफ़िर क़रार पाए। इसे बात बात पर फ़रमाया जाये, "तुम कहाँ घूम रहे हो" "उनमें से अक्सर बे अक़ल हैं" "क्या तुम डरते नहीं हो?" "उनमें से अक्सर बे इल्म हैं" "क्या तुम नसीहत नहीं लेते हो?" "तुम पर किसने जादू कर दिया? आदि आदि ।इस उलझन को भी क़ुरआन करीम ने दूर फ़रमा दिया:

काफ़िर क्यूँ?

मैं कुफ्फ़ारे मक्का और नबी अकरम सल्लालाल्हू अलैहि वसल्लम के बीच मुख़ालिफ़त की वजह पूछने के लिए बेक़रार हो गया। यह पाक किताब जोकि:

هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ

यह लोगों के लिए हिदायत और हिदायत को बयान फ़रमा कर हक़ और बातिल में फ़र्क करने वाली किताब है। (अल बक़रः 2/185)

इसमें मैंने एक आयत पढ़ी, लीजिये आप भी पढ़िए और अपनी परेशानी मेरी तरह दूर कर लें:

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾

वह अल्लाह के सिवा उन लोगों की इबादत करते हैं, जो न उनको नुक़सान दे सकते हैं और न फ़ायदा दे सकते हैं और कहते हैं कि यह अल्लाह के पास हमारी सिफ़ारिश करते हैं। उनको फ़रमा दें कि क्या तुम अल्लाह को आसमान और ज़मीन की उन चीज़ों की ख़बर दे रहे हो जिनका उसको इल्म नहीं। तुम्हारे शिर्क से अल्लाह पाक और बुलंद है। (युनुस 10/18)

ग़ौर फ़रमाईये: कि इस आयत में उन लोगों का क़सूर बता दिया गया है और अल्लाह के पास किसी फ़ौत शुदा बुज़ुर्ग की रूह को पुकारना कि वह सिफ़ारिश करे। इसी को अल्लाह ने शिर्क क़रार दिया है, फिर इसी क़ुरान ही में लिखा हुआ मैंने पढ़ा, लीजिये आप भी पढ़ें:

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط

जिन लोगों ने अल्लाह के अलावा दूसरों को वली बना रखा है (उनके बारे में वो कहते हैं कि) हम उनकी बंदगी ही इसी ग़रज़ के लिए करते हैं कि यह हमको अल्लाह के क़रीब कर दें। (अज़ ज़ुमर 39/3)

ख़ुलासा ए कलाम

क़ुरआन पाक के पढ़ने से यह बात ज़ाहिर हुई कि कुफ्फ़ारे मक्का भी हिन्दू की तरह एक अल्लाह के मुन्किर न थे, जबकि वह उसी से दुआएं मांगते थे, मगर उसके साथ बुज़ुर्गो की इबादत भी करते थे। यानी उनकी नज़र ओ नियाज़ और चढ़ावे भी देते थे। उनके नाम के वज़ीफ़े भी करते थे कि उनकी रूहों को ख़ुश कर लिया जायें, तो यह हमारी सिफ़ारिश करते हैं और अल्लाह के क़रीब करने का ज़रिया हैं। वरना कहाँ अल्लाह और कहाँ यह आदमे ख़ाकी। बस यह था फ़र्क़ और यह था झगड़ा, ज़रा ग़ौर करने पर मेरी रूह लरज़ गई की हमारे मुसलमान भी तो यही कुछ कर रहे हैं। अगर आप भी ऐसा करते हैं, तो आज ही तौबा कर लें! अब सिफ़ारिश की हक़ीक़त पर ग़ौर करें।

सिफ़ारिश की हक़ीक़त

दुनिया में सिफ़ारिश के बलबूते पर इंसान क़त्ल ओ ग़ारत में शामिल होने के बावजूद भी साफ़ बच जाता है। इसकी वजह यह है कि इंसानों में कमज़ोरियाँ होती हैं। एक इंसान दुसरे इंसान की मोहताजी महसूस करता है, सिफ़ारिश माननी पड़ती है ग़लत हो या दुरुस्त, मगर अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है उस पर यह मिसाल फिट नहीं बैठती, क्यूंकि अल्लाह पर किसी का दबाव नहीं। अल्लाह ने एक सवाल पुछा है:

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٨

तुम्हारे लिए हम तुम्हारी ही जानों से एक मिसाल पेश करते हैं (वह यह कि) क्या तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारी इस दौलत में बराबर के शरीक हो सकते हैं जो तुमको हमने दी हुई है? क्या तुम उनसे इसी तरह डरने लगते हो जिस तरह तुम आपस में एक दुसरे से डरते हो? इसी तरह हम अक़्ल वाले लोगों के लिये आयतें बयान करते हैं। (अर रूम 30/28)

ग़ौर फ़रमाइए कि आप अल्लाह के दिए हुए इख़्तियार में जो आपके अपने भी नहीं हैं, किसी का भी दख़ल गवारा नहीं करते तो अल्लाह के लिए इस तरह का तसव्वुर क्यूँ करते हो? अल्लाह किसी की सिफ़ारिश मान लेने पर मजबूर नहीं है। नबी और वली सब मजबूर हैं, बल्कि उसकी इजाज़त के बिना वहां कोई सिफ़ारिश कर ही नहीं सकेगा।

अल्लाह की इजाज़त के बिना सिफ़ारिश

इरशादे ख़ुदावंदी देखिये:

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

आसमान और ज़मीन में हर चीज़ सिर्फ़ उसी के लिए है कौन है जो उसकी इजाज़त के बिना सिफ़ारिश करे? वह तो उनके सामने और पीछे की हर चीज़ को जानता है। (अल बक़रः 2/255)

सिफ़ारिश तो उसके सामने होती है जो ख़ुद कमज़ोर हो और उसको डर हो, अगर मैंने सिफ़ारिश न मानी तो यह सिफ़ारिश करने वाला नाराज़ हो जायेगा और मेरा कोई नुक़सान करेगा या जब मुझे उसकी ज़रुरत होगी तो यह मेरे काम नहीं आएगा। दूसरी सूरत यह होती है कि जिसके सामने सिफ़ारिश की जाती है, उसकी मालूमात महदूद (की सीमाएं) होती हैं। उसको बताने की ज़रुरत होती है कि जो आपके इल्म में नहीं आया, वह मैं जानता हूँ। अगर आप मेरी बात पर यक़ीन न करेंगे तो आप ज़ुल्म कर बैठेंगे, नाइंसाफी होगी। उसको भी सिफ़ारिश करने वाले पर यक़ीन करना पड़ता है कि शायद यह सिफ़ारिश करने वाला दुरुस्त ही कह रहा हो, मगर अल्लाह के ज़िम्मे आप कोई कमज़ोरी लगा ही नहीं सकते, फिर सिफ़ारिश की हक़ीक़त क्या है? सोचिये, इरशाद हुआ है:

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا

क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवा सिफ़ारिशी पकड़ रखे हैं? उनको फ़रमा दें कि भले ही उनको कोई समझ न हो और न कोई इख़्तियार फ़रमा दें कि सिफ़ारिश का हक़ पूरे तौर पर अल्लाह के क़ब्ज़े क़ुदरत में है। (अज़ ज़ुमर 39/43-44)

एक आम ऐलान

फिर देखिये:

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَ مَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿۲۲﴾ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ

उनको फ़रमा दो कि अल्लाह के सिवा तुम्हें जिन पर गुमान है उनको पुकार कर देख लो। उनको तो आसमानों और ज़मीन में ज़र्रा बराबर भी इख़्तियार नहीं है। उनका इनदोनों में कुछ भी सांझा नहीं और न उनमें से कोई उसका (अल्लाह का) मददगार है उसके यहाँ उसकी इजाज़त के बिना किसी सिफ़ारिश का कोई फ़ायदा नहीं। (सबा 34/22-23)

एक और ऐलान देखिये:

مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾

उसके इज़्न के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं है यह है अल्लाह जो तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसकी इबादत करो। क्या तुम नसीहत नहीं हासिल करते?" (युनुस 10/3)

इज़्न क्या है?

अब समझने की बात यह है कि यह इज़्न क्या है? जब मैंने बार बार पढ़ा कि अल्लाह पर किसी का दबाव नहीं, कोई उसके काम में किसी को दख़ल देने इख़्तियार नहीं और कोई सिफ़ारिश उसके इज़्न के बिना फ़ायदेमंद नहीं, तो मेरे ज़हन में सवाल उभरा कि यह इज़्न क्या है? यह किस तरह हासिल होता है? अल्लाह तक पहुँचने के लिए क्या ज़रिये होना चाहिए?

इन सवालों का जवाब मुझे क़ुराने करीम ने जो दिया है, वह मैं आपके सामने रखूंगा, मगर उससे पहले आप उन लोगों के बारे में पढ़ लें जिन्होंने इज़्न लिए बिना सिफ़ारिश कर दी थी और उनकी सिफ़ारिश कोई फ़ायदा न पहुंचा सकी थी।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी थे, उनकी क़ौम में वही शिर्क की बीमारी फैली हुई थी जिसमें मक्का वाले फसें हुए थे। उनकी इस्लाह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के सुपुर्द की गयी।

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰى قَوۡمِهٖۤ اَنۡ اَنۡذِرۡ قَوۡمَكَ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِيَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ①

हमने नूह अलैहिस्सलाम को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा था कि अपनी क़ौम को दर्दनाक अज़ाब के आने से पहले डरा लें। (नूह 71/1)

فَلَبِثَ فِيۡهِمۡ اَلۡفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمۡسِيۡنَ عَامًا

तो वो उनमें पचास कम हज़ार साल रहें। (यानी 950 साल)" (अल अनकबूत 29/14)

इस साढ़े नौ सौ साल में से बअसत से पहले के चालीस साल का वक़्त निकाल भी दें फिर भी नूह अलैहिस्सलाम नौ सौ दस साल इस क़ौम में नुबुवत के फ़राइज़ अदा करते रहे, मगर इस क़ौम के सरदारों ने ढ़िंढोरा पीट दिया:

وَقَالُوۡا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمۡ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوۡثَ وَيَعُوۡقَ وَنَسۡرًا ۚ ㉓

उन्होंने कहा तुम अपने माबूदों को मत छोड़ो तुम अपने वद को सवाअ को यग़ूस को यऊक़ को और नस्र को मत छोड़ो। (नूह 71/23)

यह पाँच नूह की क़ौम के नेक लोग थे, जिनको मौत के बाद लोगों ने अल्लाह तक पहुँचने का ज़रिया बना रखा था। नूह अलैहिस्सलाम काफ़ी लम्बे समय तक क़ौम की सख़्तियाँ बर्दाश्त करते रहे, अपने बस में न था कि क़ौम को सीधी राह पर डाल लें, या उनका कुछ बिगाड़ लें। ग़ुसताख़ियाँ बर्दाश्त करते करते सब्र का पैमाना भर गया और नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह के सामने फ़रयाद करते हैं:
"

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّىۡ مَغۡلُوۡبٌ فَانۡتَصِرۡ ⑩

तो उसने अपने रब को पुकारा कि मैं दबा हुआ हूँ, मेरी मदद फ़रमा" । (अल क़मर 54/10)

फिर अपनी ज़िन्दगी भर के हालात बयान करके अल्लाह की अदालत में मदद की अर्ज़ी दर्ज कर दी, आख़िर में यूं कहाँ:

وَقَالَ نُوۡحٌ رَّبِّ لَا تَذَرۡ عَلَى الۡاَرۡضِ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ دَيَّارًا ㉖ اِنَّكَ اِنۡ تَذَرۡهُمۡ يُضِلُّوۡا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوۡۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ㉗ رَبِّ اغۡفِرۡ لِىۡ وَلِـوَالِدَىَّ وَلِمَنۡ دَخَلَ بَيۡتِىَ مُؤۡمِنًا وَّلِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيۡنَ اِلَّا تَبَارًا ㉘

ऐ मेरे परवरदिगार ज़मीन पर कुफ्फ़ार का कोई कोई घर न छोड़, अगर तूने छोड़ दिया तो यह तेरे बन्दों को गुमराह कर दें और उनमें से जो भी जन्म लेगा बदकार और काफ़िर ही होगा। ऐ मेरे परवरदिगार मुझे, मेरे माँ बाप को, जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो, उन सारे मोमिन मर्दों और औरतों को माफ़ फ़रमा दे और ज़ालिमों के लिए तबाही को ही बढ़ा। (नूह 71/26-28)

पूरी फ़रयाद देखिये सुरह नूहः (29)

फिर इस तरह अल्लाह का हुक्म हुआ:

وَ اصۡنَعِ الۡفُلۡكَ بِاَعۡيُنِنَا وَ وَحۡيِنَا وَ لَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ‌ۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۳۷﴾

हमारी निगरानी में हमारी वही के मुताबिक़ तू कश्ती बना, ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न कीजिये, बेशक यह लोग डूबने वाले हैं। (हूद 11/37)

फिर उस क़ौम के लिए वह मनहूस दिन आ गया:

فَفَتَحۡنَاۤ اَبۡوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنۡهَمِرٍ ﴿ۖ۱۱﴾ فَجَّرۡنَا الۡاَرۡضَ عُيُوۡنًا فَالۡتَقَى الۡمَآءُ عَلٰٓى اَمۡرٍ قَدۡ قُدِرَ ﴿ۚ۱۲﴾

तो हमने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार बारिश के साथ खोल दिए और ज़मीन को फाड़ कर पानी के स्रोत में बदल दिया, सारा पानी मिल कर उस काम पर लग गया जो उनका मुक़द्दर बनाया जा चुका था'। (अल क़मर 54/11-12)

اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوۡرُ ۙ قُلۡنَا احۡمِلۡ فِيۡهَا مِنۡ كُلٍّ زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ وَ اَهۡلَكَ اِلَّا مَنۡ سَبَقَ عَلَيۡهِ الۡقَوۡلُ وَ مَنۡ اٰمَنَ ؕ
مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيۡلٌ ﴿۴۰﴾

जब हमारा हुक्म आ गया और तनूर ने (पानी का) जोश मारा, हमने हुक्म दिया कि उसमें हर क़िस्म के दो दो जोड़े और अपने घर वालों को भी सिवाए उन लोगों के जिनके बारे में पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी और थोड़े लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। (हूद 11/40)

ग़ौर फ़रमाइए बात समझ आ जाएगी कि घर वालो को सवार करने का हुक्म देते हुए इरशाद हुआ था कि उनमें से उनको सवार न करना जिनके के लिए अज़ाब मुक़र्रर हो चुका है, फिर फ़रमा दिया था कि ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न करना। आप हैरान होंगे कि उन बदनसीबों में नूह अलैहिस्सलाम का अपना बेटा भी था, जिसे ख़तरे में देख कर बाप की शफक्क़त ने जोश मारा कि अल्लाह की तरफ़ से लगाई गई पाबन्दी भूल गए:

وَ نَادٰى نُوۡحُ اۨبۡنَهٗ وَكَانَ فِىۡ مَعۡزِلٍ يّٰبُنَىَّ ارۡكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنۡ مَّعَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِىۡۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِىۡ مِنَ
الۡمَآءِ‌ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الۡيَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ‌ ۚ وَحَالَ بَيۡنَهُمَا الۡمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِيۡنَ ﴿۴۳﴾ وَقِيۡلَ يٰۤاَرۡضُ
ابۡلَعِىۡ مَآءَكِ وَ يٰسَمَآءُ اَقۡلِعِىۡ وَغِيۡضَ الۡمَآءُ وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَى الۡجُوۡدِىِّ‌ وَقِيۡلَ بُعۡدًا لِّلۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ○

और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था कि ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत रह, उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा, नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे और दोनों के बीच एक मौज आई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। (हूद 11/42-44)

मगर बाप की शफक्क़त फिर भी बाज़ न आई और नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह के सामने इस तरह फ़रयाद करने लगे:

وَ نَادٰى نُوۡحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِىۡ مِنۡ اَهۡلِىۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَـقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ‏ ﴿45﴾ قَالَ يٰـنُوۡحُ اِنَّهٗ لَـيۡسَ
مِنۡ اَهۡلِكَ‌ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ‌ ‌ۖ فَلَا تَسۡـَٔـلۡنِ مَا لَـيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ اِنِّىۡۤ اَعِظُكَ اَنۡ تَكُوۡنَ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ‏ ﴿46﴾ قَالَ رَبِّ
اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ اَنۡ اَسۡـَٔلَكَ مَا لَـيۡسَ لِىۡ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ وَاِلَّا تَغۡفِرۡ لِىۡ وَتَرۡحَمۡنِىۡۤ اَكُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِيۡنَ‏ ﴿47﴾

नूह अलैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार को पुकारते हुए कहा ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक मेरा बेटा भी तो मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा भी हक़ है और तू हाकिमों का हाकिम है जवाब आया कि ऐ नूह! वह तेरे घर वालों में से नहीं है, क्यूंकि उसके अमल ख़राब हैं, तो जिसका तुमको इल्म न हो उसके बारे में मुझसे सवाल मत करो। मैं तुमको नसीहत करता हूँ ताकि तुम जाहिलों में से न हो जाओ। नूह अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह चाहता हूँ कि आपसे वह चीज़ माँगूं जिसका मुझे इल्म नहीं और अगर आप मुझे माफ़ न करे और मुझ पर रहम न फरमाएं तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा। (हूद 11/45-47)

देख लिया आपने कि निज़ामे इलाही में सब बेबस हैं। न कुफ्फ़ार को सज़ा देना बस में हैं न गिरफ़्तशुदा बेटे को छुड़ाना बस में हैं। वह थी बिना इज़्न के सिफ़ारिश और यह था उसका हश्र। इस मक़ाम पर मेरा यह अक़ीदा तार तार हो गया कि यारों को यार की माननी ही पड़ती है। यह बात अल्लाह के बारे में ग़लत है, उसको मजबूर कोई नहीं कर सकता। इधर हम हैं कि हर मुफ़्तख़ोरे मलंग से उम्मीदें बाँध रखी हैं। कभी सोचना चाहिए कि नौ सौ साल से ज़्यादा तबलीग़ करने वाले नबी अलैहिस्सलाम अपने बेटे के लिए अल्लाह से अपनी बात न मनवा सके तो "क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा" उन लोगों से क्या उम्मीद हो सकती है जो अपने लिए भी शून्य हैं और शून्य भी बहुत बड़ा। इन्साफ करिए अगर गलत कह रहा हूँ तो मुझे हक़ से आगाह करियेगा। फ़िरक़ा परस्ती गुनाह है, इससे बाहर निकल कर क़ुरान पर ग़ौर फ़रमाइए। तआस्सुब से ख़ुदा की पनाह मांगिए।

एक गलत फ़हमी और भी पैदा हो सकती है कि दुसरे अम्बिया किराम को तो इख़्तियार नहीं, मगर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इमामुल अम्बिया हैं, उनको तो मुख़तारे कुल बनाया गया है। उनकी रूह को पुकार कर अपनी ज़रूरतें पेश करना जायज़ है। इस सिलसिले में क़ुरआने करीम की इस आयात पर ग़ौर फ़रमाइए। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर से कहलवा रहा है ताकि उम्मत के दिमाग़ो की इस्लाह हो जाये:

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ‌ ؕ

फ़रमा दें कि मैं तो अल्लाह की मर्ज़ी के बिना अपनी जान के लिए भी फ़ायदा और नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखता। (अल आराफ़ 7/188)

यही हुक्म पारा 11 सुरह युनुस रुकूअ 5 में भी देखिए:
फिर सरदारे दो जहाँ की ज़िन्दगी पर ग़ौर फ़रमाइए, तो उन आयतों की तसदीक़ होती है, जैसे बुख़ारी और मुस्लिम, मिश्कात शरीफ़ में हदीस है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहू अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह के साथ अबू युसुफ़ के पास गया जोकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे इब्राहीम की दाई के शौहर थे। नबी अकरम ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को गोद में ले लिया प्यार किया और सूंघा यानी अपनी नाक और मुंह को उनके मुंह पर इस तरह रखा जिस तरह कोई सूंघता है उसके कुछ दिन बाद फिर अबू युसुफ़ के पास गए। इब्राहीम उस वक़्त वफ़ात के क़रीब थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

आँखें उनको देख कर बहने लगीं। अब्दुर रहमान बिन ऑफ रज़ियल्लाहू अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह! आप भी रोते हैं? आपने फ़रमाया: ऐ इब्ने ऑफ! यह आँसू रहमत हैं। उसके बाद फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू जारी हो गए और आपने फ़रमाया:

إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلَا نَقُولُ إِلَّا مَا يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَمَحْزُونُونَ

आँखें आँसू बहाती हैं, दिल ग़मगीन है और हम अपनी ज़बान से सिर्फ़ वही बात कहते हैं जिस पर हमारा रब राज़ी हो । ऐ इब्राहीम! बेशक मैं तेरी जुदाई से ग़मगीन हूँ। (सही बुख़ारी: 1303, सही मुस्लिम: 6025)

यह है अल्लाह और यह है बंदा जो कि उसकी मर्ज़ी के सामने बिल्कुल बेबस है। मैं एक अरसे तक इसी सोच में डूबा रहा कि आख़िर किसी मकान की छत पर चढ़ने के लिए सीढ़ी होनी चाहिए, किसी बड़े शख़्स तक पहुँचने के लिए Proper Channel होता हैं। आख़िर अल्लाह तक भी तो यह बुज़ुर्ग Proper Channel ही हैं न। उसका इज़्न हासिल करने के लिए भी तो कोई वसीला चाहिए। वह वसीला भी आपको ज़रूर बताऊंगा, मगर इससे पहले हुज़ूर की ज़िन्दगी के कुछ वाक़िआत संक्षिप्त में पढ़ लीजिये:

जंगे उहुद में बहुत से मुसलमान शहीद हो गए, ख़ुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे चचा हमज़ा रज़ियल्लाहू अन्हु भी शहीद हो गए। इस दुःख को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी न भुला सके, उनका क़ातिल वहशी मुसलमान हो गया, मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कभी मेरी आँखों के सामने न आओ क्यूंकि मुझे चचा याद आयेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दांत मुबारक भी शहीद हुआ और चोटें भी आई । यह सब अल्लाह की मर्ज़ी थी, वरना कौन सदमे उठाने का शौक़ रखता है।
आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताइफ़ में तबलीग़ करने के लिए गए, ज़ैद बिन हारिसा आपके साथ थे।ताइफ़ के सरदारों ने आपकी दावत को क़ुबूल न किया, बल्कि गुंडों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे लगा दिया, जो ग़ुसताख़ियाँ करते रहे और आपकी ज़ात पर पत्थर बरसाते रहे। जिस्म मुबारक ज़ख़्मी हो गया, ख़ून बह कर जूती भी पैर के साथ जम गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिल घबराने लगा, मगर लड़के आपको बैठने भी न देते थे, पत्थर मार कर चलने पर मजबूर कर देते थे। यह थी अल्लाह की मर्ज़ी और वह थी उसके बन्दे की, उसकी मर्ज़ी के सामने मजबूरी और बेबसी। इसके अलावा भी बहुत से वाक़िआत इन आयतों की तसदीक़ करते हैं, मगर संक्षिप्त करने के लिए इनको छोड़ रहा हूँ।

एक और ग़लत फ़हमी का जवाब

एक करम फ़रमा ने मेरे ज़हन को एक अजीब ही चक्कर में डाल दिया था। आप इससे बच जायें, वह यह कि वह तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, उनका मामला तो अल्लाह के साथ है, उनके लिए तो सिर्फ़ अल्लाह ही जो करे, सो करे, क्यूंकि उनकी सिफ़ारिश तो वही करे जो उनसे बड़ा हो। हमारे लिए तो वह ही सिफ़ारिश कर सकते हैं, वह हमारे लिए वसीला हैं। मेरी ग़लत फ़हमी को क़ुरान पाक ने यूं दूर कर दिया था:

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

फ़रमा दें कि मैं तुम्हारे लिए किसी भी फ़ायदे और नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखता। (अल जिन 72/21)

इसकी तसदीक़ मुझे यूं मिली कि एक मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबई मर गया, उसने ज़िन्दगी में बज़ाहिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने की कोशिश की। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको अपना कुरता भी पहनाया। इस पर नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी और दुआ ए मग़फ़िरत भी फ़रमाई, मगर क्यूंकि अल्लाह का इज़्न नहीं था, इसलिए अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से जवाब आ गया:

اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ

आप उनके लिए बख़्शिश मांगें या न मांगें बल्कि आप उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश मांगें तब भी अल्लाह उनको माफ़ नहीं फ़रमाएगा। (अत तौबा 9/80)

बल्कि आइन्दा के लिए एक क़ानून बना दिया:

مَا كَانَ لِلنَّبِىِّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ يَّسۡتَغۡفِرُوۡا لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ وَلَوۡ كَانُوۡۤا اُولِىۡ قُرۡبٰى مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُمۡ اَصۡحٰبُ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۳﴾

नबी को और ईमान वालों को नहीं चाहिए कि वह मुशरिकों के लिए दुआ ए मग़फ़िरत करें, चाहे वो उनके क़रीबी भी हों, जबकि यह ज़ाहिर हो जाए कि वह जहन्नम वाले हैं। (अत तौबा 9/113)

फिर फ़रमाया:

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمۡ عَلٰى قَبۡرِهٖ ؕ

अगर उनमें से कोई मर जाए तो उन पर नमाज़ भी न पढ़ें, बल्कि उनकी क़ब्र पर भी खड़े न हों। (अत तौबा 9/84)

दूसरा रुख़

यह तो था ख़ैर के इरादे से बिना इज़्न जो पूरा न हुआ, अब दूसरा रुख़ लीजिये:
बुख़ारी, मुस्लिम और मिश्कात शरीफ़ में यह हदीस मिलती है कि नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक क़ौम के आग्रह पर उनको तालीम देने के लिए सत्तर क़ारियों को उनके साथ रवाना फ़रमाया। उस क़ौम की तरफ़ से यह एक धोका था, क़ारियों को क़त्ल कर दिया गया, इस ज़ुल्म की ख़बर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुई तो सख़्त दुःख हुआ। आपने एक महीने लगातार नमाज़े फ़ज्र में दुआ ए क़ुनूत के साथ उन क़ातिलों के लिए बद दुआ फ़रमाई और क़त्ल हुए क़ारियों के लिए दुआ ए मग़फ़िरत फ़रमाई, अल्फ़ाज़ यह थे:

ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को सलमा बिन हिशाम को और अय्याश बिन उबई रबिआ को निजात दे और ऐ अल्लाह! क़ौमें मुज़िर को अपना सख़्त अज़ाब नाज़िल फ़रमा और उस अज़ाब को सूखा की शकल में नाज़िल कर, ऐसा सूखा जो युसुफ़ अलैहिस्सलाम के सूखा की तरह हो (यानी सात साल) (सही बुख़ारी: 4560, सही मुस्लिम: 1540)

आप अंदाजा करिए कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितना ज़्यादा ग़म था कि यह बद दुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुलंद आवाज़ से करते थे:

ऐ मेरे अल्लाह! तू फ़ला फ़ला मर लानत फ़रमा। (सही बुख़ारी: 4560)

यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन अरब क़बीलों का नाम लेते थे, जो क़ातिल थे, बद दुआ जारी रही, यहाँ तक कि हुक्म आ गया:

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝١٢٨ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢٩

इसमें आपका कोई दख़ल नहीं हैं अल्लाह उन लोगों को माफ़ कर दे या उनको अज़ाब दे, बस वह ज़ालिम हैं। आसमान और ज़मीन में हर चीज़ अल्लाह ही के लिए है, वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अज़ाब करे, अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (आले इमरान 3/128-129)

इस आयत से

ख़ुदा का पकड़ा छुड़ाए मुहम्मद

मुहम्मद का पकड़ा छुड़ा कोई नहीं सकता

की हक़ीकत भी मुझ पर खुल गई कि यह झूट है, क्यूंकि छुड़ाना चाहा तो छुड़ा न सके और पकड़ना चाहा तो पकड़ न सके।अल्लाह का मक़ाम वह है और बन्दे का मक़ाम यह है:

ख़ुर्द और अदराक रंजूर हैं वाँ
मह व महर अदना से मज़दूर हैं वाँ
जहांदार मग़लूब व मक़हूर हैं वाँ
नबी और सिद्दीक़ मजबूर हैं वाँ
न परस्तिश है रहबान व अहबार की वाँ
न परवा है, अबरार व अहरार की वाँ

यह बात बताने से पहले कि अल्लाह का इज़्न क्या है और किस तरह हो सकता है। मैं ज़रूरी समझता हूँ कि आपको एक और उलझन से निकालने की कोशिश करूं कि साहिबे क़ब्र, साहिबे बुत या साहिबे जगह व मकान जो इस ज़िन्दगी के क़ैदो से आज़ाद होकर अल्लाह के महमान हो चुके हैं, वह हमारी दुआओं, पुकारों और फ़रयादों से बेनियाज़ हैं और बेख़बर हैं। अलबत्ता वह हमारी पुर ख़ुलूस दुआओं के ज़रूरतमंद हैं, इसी लिए तो हम नमाज़े जनाज़ा में उनके लिए दुआएं करते हैं।

मौत के बाद सिफ़ारिश

कुरआन ए करीम की दो आयतों को अक्सर उल्माएं किराम यह साबित करने के लिए पेश करते हैं कि शहीद जिंदा हैं, इसलिए उनसे मदद तलब करना और उनको सिफ़ारिश के लिए कहना जायज़ है। बात को

मुख़्तसर रखने के लिए उन आयतों पर बहस करना नहीं चाहता, मगर यह ज़रूर कहता हूँ कि ज़िन्दों की सिफ़ारिश बिना अल्लाह के इज़्न के क्या हुई? इसको आपने देख लिया, अब कुछ वाक़िआत पेश करता हूँ ताकि ग़लतफ़हमी दूर हो जाये और मौत के बाद की ज़िन्दगी का कुछ तस्सवुर आपके ज़हन में क़ायम हो जाये।

क़िस्सा असहाबे कहफ़

यह उन जिंदा औलियाँ अल्लाह का क़िस्सा है जो ज़िन्दगी में नींद की हालत में ज़मीन की सतह पर तीन सौ नौ साल सोते रहे और थक जाने पर पहलु भी बदलते रहे, मगर जब अल्लाह ने उनको नींद से जगाया तो ज़माने के हालात से बेख़बर थे, लीजिए अब क़ुरआन की ज़बानी पढ़िए:

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا۝٩

क्या तुम ख़याल करते हो कि असहाबे ग़ार और कोह हमारी अजब निशानियों में से हैं। (अल कहफ़ 18/9)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ۝١٣ وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا
فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ۝١٤ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝١٥

हम उनका क़िस्सा आप पर सच्चा बयान करते हैं, वह कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान ले आये थे और हमने उनको और ज़्यादा हिदायत बख़्शी। जब वह (ज़ालिम वक़्त के हाकिम के दरबार में) खड़े हुए तो हमने उनके दिलों पर गिरह बाँध दी ।(यानी दिलों को मज़बूत कर दिया) तो उन्होंने कहा हमारा रब तो वह है, जो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम उसके अलावा किसी माबूद को नहीं पुकारेंगे (अगर हमने ऐसा किया) तो यह अक़्ल से दूर की बात होगी। हमारी यह क़ौम है कि इसने उसके अलावा माबूद बना रखे हैं ।वह इसके लिए दलील क्यूँ नहीं लाते, भला उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बांधे। (अल कहफ़ 18/13-15)

यह बातचीत वह औलियाँ अल्लाह उस काफ़िर ओ ज़ालिम बादशाह के दरबार में खड़े होकर कर रहे थे जिसका नाम "दक़्यानूस" बताया जाता है। उसके सामने उनको तौहीद इख़्तियार करने के जुर्म में पेश किया गया था। अल्लाह ने उनके हौसले बुलंद रखने के अलावा उनके दिलों में यह बात डाल दी:

وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ
مِّرْفَقًا ۝١٦

जब तुम उन लोगों और अल्लाह के सिवा उनके माबूदों से अलग हो जाओ तो ग़ुफ़ा में पनाह ले लो ताकि तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत का दामन फैला दे और तुम्हारे लिए उससे आराम का सामान पैदा कर दे। (अल कहफ़ 18/16)

कहते हैं कि बादशाह ने किसी वजह से और अपनी व्यस्त्ता की वजह से इस काम को कुछ वक़्त तक टाल दिया। यह औलिया अल्लाह अलग होते ही उस ग़ुफ़ा की तरफ़ चले गए, जिसके लिए अल्लाह ने उनके

दिलों में वही फ़रमा दी थी। उनका एक वफ़ादार कुत्ता भी उनके पीछे पीछे चल दिया। यह ग़ुफ़ा में दाख़िल हो गए और आराम की सांस लेने के साथ ही दुआ मांगी:

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

जब वो नौजवान उस ग़ुफ़ा में जा बैठे तो दुआ की कि ऐ हमारे रब हमको अपनी तरफ़ से रहमत अता फ़रमा और अपने पास से हमारे लिए भलाई के सामान पैदा फ़रमा। (अल कहफ़ 18/10)

घबराहट और थकावट की वजह से लेट गए और सो गए, अल्लाह ने उनकी हालत यूं बयान फ़रमाई:

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾

तो हमने कई सालों तक उनके कानों को थपक दिया। (अल कहफ़ 18/11)

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ
ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ
رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ
فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

तू देखेगा कि सूरज जब निकलता होता है तो बच कर उनकी ग़ुफ़ा के दाहिने तरफ़ से निकल जाता है जब डूबता है तो बायें तरफ़ से बच कर निकल जाता है। वह मैदान में पड़े हुए हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से हैं। हिदायत वाला वही हो सकता है जिसको अल्लाह हिदायत दे जिसको वह गुमराह फ़रमा दे उसको कोई दोस्त और रहनुमा नहीं मिल सकता। तुम समझोगे कि वह जाग रहे हैं, मगर वह ख़्वाब में हैं। हम उनको दायें और बायें करवटें बदलवाते हैं। उनके कुत्ते ने ग़ुफ़ा को चौखट पर बाज़ू फैला रखे हैं। अगर तुम उनको कभी झाँक कर देख लो तो उनसे पीठ फेर कर भाग जाओगे और उनका ख़ौफ़ तुम पर छा जाये। (अल कहफ़ 18/17-18)

यूं वह सुकून से सोते रहे यहाँ तक कि:

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

वह अपनी ग़ुफ़ा में तीन सौ साल से ऊपर पड़े रहे। (अल कहफ़ 18/25)

फिर:

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَ
لْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا
اَبَدًا ﴿٢٠﴾

इस तरह हमने उन्हें उठा खड़ा किया कि वो आपस में पूछताछ करें। उनमें एक कहने वाले ने कहा, तुम कितना ठहरे रहे? वो बोले हम यही कोई एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। उन्होंने कहा, जितना तुम यहाँ तहरे हो उसे तुम्हारा रब ही अच्छी तरह जानता हैं। अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना किस जगह मिलता है। तो उसमें से वह तुम्हारे लिय कुछ खाने को ले आए और चाहिए कि वह नरमी और होशियारी से काम ले और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। अगर वह कहीं तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो पथराव करके तुम्हें मार डालेंगे या तुम्हे अपने मज़हब में लौटा ले जाएंगे और तब तो तुम कभी भी कामयाब न हो सकोगे। (अल कहफ़ 18/19-20)

ग़ौर फ़रमाइए कि तीन सौ नौ साल से ज़्यादा ख्व़ाब में रहे ज़मीन के ऊपर सांस भी लेते रहे, पहलू बदलते रहे मगर दुनिया और उसमें होने वाली चीज़ों से बेताल्लुकी का यह हाल कि उनको अहसास ही नहीं कि कितनी बहारें उन पर से गुज़र चुकी हैं और कितने ताजदार ख़ाक में मिल चुके हैं। वह ख़तरा महसूस कर रहे हैं मगर उनको मालूम ही नहीं कि जिस से भागे थे, वह दुनिया से मुद्दत हुई कूच कर चुके हैं और बाक़ी जो हैं वह उनके हमदर्द हैं। यह हाल है ज़मीन के ऊपर ख्व़ाब में सोये हुए औलिया किराम का फिर कोई किस तरह अंदाजा कर सकता है कि क़ब्र में कई किलोग्राम मिट्टी, ईंटों और सीमेंट के नीचे पड़ा हुआ अल्लाह का दोस्त जो अल्लाह का ख़ास मेहमान है, आपके हालात और आपकी परेशानियों से वाकिफ़ और बाख़बर है।

क़िस्सा उज़ैर अलैहिस्सलाम

धोके में डालने वाला आपको धोके में न डाल दे कि यह तो नींद है, मगर मौत के बाद अल्लाह से जा मिलता है, वह हमारे हालत से आगाह होता है और हमारी सिफ़ारिश करता है आदि।
लीजिये एक नबी अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सुनिए जो एक गधे पर सवार थे कि उनको मौत आ गयी, एक सौ साल मौत की हालत में पड़े रहे और फिर जिंदा किये गए मगर ज़माने के बदलाव से वह बेख़बर ही थे:

اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ
قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَ
انْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ
اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾

या जैसे वह शख़्स जिसका गुज़र एक ऐसी बस्ती पर से हुआ जो अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी, उसने कहा अल्लाह किस तरह इस बस्ती को हलाक हो जाने के बात दोबारा ज़िंदा करेगा? तो अल्लाह ने सौ साल तक के लिए उसे मौत दे दी फिर उसको ज़िंदा किया, अल्लाह ने पुछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे? उसने कहा एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, अल्लाह ने कहा नहीं, बल्कि तुम सौ साल रहे हो, अब तुम अपने खाने और पीने की चीज़ों को देखो कि वह सड़ी नहीं है और ज़रा देखो अपने गधे को और ताकि हम तुमको लोगों के लिए निशानी बना दें, और हड्डियों को भी देखो कि किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं फिर उन पर गोश्त चढ़ाते है। (अल बक़रः 2/259)

इन वाक़िआत पर अगर आप भी ग़ौर फ़रमाएं तो समझ में यह बात आती है कि मौत होने जाने के बाद किसी नबी या बुज़ुर्ग का इस दुनिया से कोई वास्ता नहीं रहता वह हमारी परेशानियाँ ही नहीं सुन सकते तो वो क्या हमारी मदद करेंगे, बुरा न माने, बल्कि सोचें और क़ुरान पढ़ें। इसी में आपका फ़ायदा है, ग़ुस्से में आना आपको कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकता लीजिये और पढ़ें:

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝٥ وَاِذَا
حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦

उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह के सिवा उसको पुकारता है जो क़यामत के दिन तक उसकी पुकार क़ुबूल न कर सके और उसकी चीख़ पुकार से ही बेख़बर हो, फिर जिस दिन लोगों को इकठ्ठा किया जाएगा तो वह उस पुकारने वाले के दुशमन होंगे और उनकी इबादत का इनकार कर देंगे। (अल अहक़ाफ़ 46/5-6)

ग़ौर फ़रमाएं! तो साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि इससे मुराद महज़ बुत नहीं, बल्कि वह हस्तियाँ मुराद हैं जिनसे कोई बुत या क़ब्र मंसूब होती है और जिनको लोग अक़ीदत से पुकारते हैं, अगर
यक़ीन नहीं आया तो और क़ुरान पाक पढ़ें, इरशाद हुआ है:

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝١٩١ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝١٩٢

क्या यह लोग उनको अल्लाह का शरीक बनाते हैं जो कुछ पैदा तो नहीं करते बल्कि ख़ुद पैदा किये गए हैं वह उनकी मदद की भी ताक़त नहीं रखते और अपने लिए भी कुछ नहीं कर सकते। (अल आराफ़ 7/191-192)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٩٤ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ
يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا

बेशक जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह तुम्हारी तरह के बन्दे ही हैं तो तुम उनको पुकार कर देखो और अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हारी पुकार को क़ुबूल करें, क्या उनके पैर हैं जिनसे वह चल सकें? क्या उनके हाथ हैं, जिनसे वह पकड़ सकें? क्या उनकी आँखें हैं, जिनसे वह देख सकें, क्या उनके कान हैं जिनसे वह सुन सकें। (अल आराफ़ 7/194-195)

सोचिये! कि उस शख़्स से बढ़ कर कौन रहम के क़ाबिल हो सकता है जो अल्लाह जो हर चीज़ पर क़ादिर है को छोड़ कर उन बुज़ुर्गों को पुकारता है जो हमारी तरह के बन्दे तो हैं, मगर उनके जिस्म के हिस्से काम नहीं करते, यह बुत नहीं, बल्कि हमारे जैसे बन्दे हैं फिर फ़रमाया:

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝٢٠ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ
يُبْعَثُوْنَ ۝٢١

और अल्लाह के अलावा जिन लोगों को भी यह पुकारते हैं वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद पैदा किये गए हैं, वह मुर्दा हैं ज़िंदा नहीं हैं, वह यह भी नहीं जानते कि कब उठाएं जाएंगे। (अन नहल 16/20-21)

बुतों को उठाये जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता, यह बुज़ुर्ग ही हैं। इनको मालूम तक नहीं कि उनको पुकारा जा रहा है, क़यामत के दिन वह इनकार कर देंगें, बल्कि झगड़ेंगें:

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا
كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

उस दिन हम उन सब को इकठ्ठा करेंगें फिर शरीक बनाने वालों को कहेंगें कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह खड़े रहो, फिर हम उनको अलग अलग कर देंगें, जिनको वह अल्लाह का शरीक बनाते रहे होंगें, वह कहेंगें कि हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है कि तुम हमारी इबादत हरगिज़ नहीं करते थे, हम तो तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। (युनुस 10/28-29)

अल्लाह करे कि अब आप समझ गए हों कि यह झगड़ने वाले बुत नहीं, बल्कि बुज़ुर्ग हैं क्यूंकि अल्लाह ने उनसे भी जवाब तलबी फ़रमाई है और वह अपना दामन साफ़ करने के लिए झगड़ रहे हैं:

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾
قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَ
كَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ

जिस दिन उन्हें इकठ्ठा किया जाएगा और उनको भी जिन्हें वह अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा क्या मेरे बन्दों को तुमने गुमराह किया था या यह ख़ुद ही गुमराह थे? वह कहेंगें तेरी ज़ात तो पाक है, यह हमसे नहीं हो सकता था कि तुझे छोड़कर दुसरे को सरंक्षक बनाएँ मगर तू ख़ुद ही उनको और उनके बाप दादा को फ़ायदा देता रहा यहाँ तक कि वह तेरा ज़िक्र भुला कर एक हलाक़ होने वाली क़ौम हो गए । (ऐ मुशरिकों) जो दावा आज तुम कर रहे हो उनमें वह तुमको झुटा क़रार देंगें, तुम अल्लाह के अज़ाब का रुख़ भी न फेर सकोगे और तुम्हारा कोई मददगार भी न होगा। (अल फ़ुरक़ान 25/17-19)

मेरे भाइयों! क्या अब भी आप समझ रहे हैं कि यह बुत ही हैं, बुज़ुर्ग नहीं हैं, लीजिये एक बुज़ुर्ग का नाम ही ले कर आप की ग़लत फ़हमी दूर कर देता हूँ, इरशाद है:

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ
لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۗ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾

जब अल्लाह फ़रमाएगा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम! क्या तुमने इनको कहा था कि मुझको और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा माबूद बना लो? वह जवाब देंगें कि ऐ रब तू तो पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझको ज़रूर मालूम होगा, तू जानता हैं जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में हैं, बेशक तू ही तो छुपी बातों को जानने वाला है। मैंने तो उनसे वहीं बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, और वह यह कि

अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तेरा रब है जब तक मैं उनके बीच रहा मैं उनको देखता रहा लेकिन जब तूने मुझको दुनिया से उठा लिया तो तू ही उन पर निगराँ था और तू तो हर चीज़ पर गवाह है। (अल माइदा 5/116-117)

जो अब भी न समझे उसका क्या इलाज है? मैंने कहा था कि बुत परस्त दुनिया में कोई नहीं, बुत की पूजा से मुराद बुज़ुर्ग की पूजा है । मौत के बाद कोई बुज़ुर्ग हमारी हालतों को नहीं जानता है, यह बुज़ुर्ग हमारी इबादत का इनकार करके अपना दामन साफ़ करने के लिए झगड़ेगें, जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, मुसलमान भाइयों! सोचों हम क्या कर रहे हैं। मौलाना हाली ने क्या ख़ूब कहा:

करे ग़ैर ग़र बुत की पूजा तो काफ़िर
जो ठहराए बेटा ख़ुदा का तो काफ़िर
कहे आग को अपना क़िबला तो काफ़िर
कवाकिब में माने करिशमा तो काफ़िर
मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें
परिस्तिश करें शौक़ से जिसकी चाहे
नबी को जो चाहे ख़ुदा कर दिखाएं
इमामों का रुतबा नबी से बढ़ाएं
मज़ारों पे दिन रात नज़रें चढ़ाएं
शहीदों से जा जा के मांगें दुआएं
न तौहीद में कुछ ख़ल इससे आये
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए

मुशरिक की मिसाल

निम्नलिखित आयतों पर ग़ौर करिए तो यह बात समझ आएगी कि शिर्क क्या है और तौहीद क्या है? मुशरिक का अक़ीदा किसी ठोस बुनयाद पर नहीं होता बल्कि मन-घड़ंत और बेबुनयाद होता है । मगर मुशरिक उसी ही अपनी मेराज ख़याल करता है। इसी तरह ज़िन्दगी बसर कर देता है और उसे कभी हिदायत नसीब नहीं होती, मुशरिक की मिसाल अल्लाह ने यूं बयान फ़रमाई है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۖ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

जिन लोगो ने अल्लाह के अलावा हिमायती पकड़े हैं उनकी मिसाल तो मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया और यह सच है कि सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है, काश कि यह जान लें। (अल अनकबूत 29/41)

ग़ौर फ़रमाइए कि जिस तरह मकड़ी अपने ही अन्दर से लैसदार लुआब निकाल कर जाल बनाती है, इसी तरह मुशरिक भी अपने अन्दर ही से ख़यालात का ताना बाना बना कर एक अक़ीदा घड़ लेता है। जिस तरह मकड़ी इस कमज़ोर घर में बैठ कर समझती है कि वह एक मज़बूत क़िले की दीवारों की तरह वह उसकी पनाह हैं। जिस तरह एक मकड़ी का जाला दामन के एक झटके से नियस्त ओ नाबूद हो जाता है, इसी तरह तौहीद का एक ही झटका आने से मुशरिक के मन-घड़ंत अकीदों का यह क़िला ज़मीन पर गिर

जाता है। सोचिये कि मुशरिक क्या है और उसका अंजाम किस क़द्र मायूस करने वाला है। मुशरिक की मिसाल बयान करते हुए अल्लाह करीम ने लोगों को मुख़ातिब करके फ़रमाया:

يَاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿۷۳﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِيْزٌ ﴿۷۴﴾

ऐ लोगो एक मिसाल पेश की जाती है, उसे ध्यान से सुनो, अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगर इसके लिए वह सब इकठ्ठे हो जाएँ और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो उससे वह उसको छुड़ा भी नहीं सकते। मांगने वाला कमज़ोर और जिससे मांगा जा रहा है वह बेबस है, लोगों ने अल्लाह की क़द्र ही नहीं जानी। वह साहिबे क़ुदरत और ग़ालिब है। (अल हज 22/73-74)

उनको बहुत सोचना चाहिए और फ़ौरन तौबा करनी चाहिए जो "या अली मदद, या अली मुशकिल कुशा, या शेख़ अब्दुल क़ादिर" आदि के नारे लगाते हैं। मुशरिक तो निहायत ही क़ाबिले रहम मख़लूक़ है कि दर दर की ख़ाक छानते उसकी ज़िन्दगी गुज़र जाती है। अल्लाह उसकी मिसाल यूं बयान फ़रमाता है:

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾

उसी को पुकारना ही हक़ है, जिनको उसके सिवा पुकारते हैं, वो उनकी कोई दुआ क़ुबूल नहीं कर सकते। (उनकी मिसाल उस प्यासे की सी है) जो अपने हाथ पानी की तरफ़ फैला रखे ताकि वह उसके मुंह में आ पहुंचें, मगर वह कभी नहीं पहुंचेगा, काफ़िरों की दुआ गुमराही में चली जाती है। (अर रआद 13/14)

यही नुक़्ता यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने कैदी साथियों को समझाने के लिए फ़रमाया था:

يٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾

ऐ मेरे क़ैद के साथियों! क्या कई अलग अलग रब बेहतर हैं या एक अकेला और ज़बरदस्त अल्लाह? तुम उसके सिवा कुछ नहीं पूजते कि तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने कुछ नाम रख लिए हैं, जिसके लिए अल्लाह ने कोई दलील नाज़िल नहीं की है। अल्लाह के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है, उसने फ़रमा दिया है कि मेरे सिवा किसी की पूजा न करो। यही पुख़्ता दीन है, मगर ज़्यादातर लोग नहीं जानते। (यूसुफ़ 12/39-40)

वसीले की हक़ीक़त और उसका तरीक़ा

यह एक ऐसा बोर्ड है जिसके नीचे बहुत से लोगों ने दुकानें सजा रखी हैं। हमारे ख़ून पसीने की कमाई चाट जाते हैं और हम यह समझते हैं कि वह हम पर बहुत बड़ा कर रहे हैं। इसी आड़ में कितने लोगों की इज्ज़तें लुट गयी हैं और कितने लोगों के ईमान लुट गए हैं।
आइये देखें कि यह वसीला क्या है? सबसे पहले यह आयत पढ़ें:

يَاَيُّهَا النَّاسُ اَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ‌ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الۡغَنِىُّ الۡحَمِيۡدُ‏ ﴿۱۵﴾

ऐ लोगो! तुम अल्लाह के सामने फ़क़ीर हो और अल्लाह ग़नी और तारीफ़ किया गया है। (फ़ातिर 35/15)

तमाम मोहताज हैं और सिर्फ़ वही ग़नी है। वह इस बात का भी मोहताज नहीं कि उसकी कोई तारीफ़ करे। उसकी तारीफ़ कोई करे या न करे वह सिफ़त वाला है।

आइये हम कुछ फ़क़ीरों के हालात पढ़ें और देखें कि उन्होंने ज़रुरत के वक़्त अल्लाह तक पहुँचने के लिए क्या क्या किया ताकि हम भी वही वसीला अपनाएं।
हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का क़िस्सा पहले बयान किया जा रहा है, फिर ग़ौर से पढ़ लें कि उन्होंने अल्लाह से मदद किस तरह मांगी थी।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम: अगर गलती हो जाए तो इब्लीस की तरह दिलेर नहीं हो जाना चाहिए, बल्कि आदम अलैहिस्सलाम की तरह फ़ौरन माफ़ी मांग लेनी चाहिए। तौबा करने वालों को अल्लाह बहुत पसंद करता है, देखिये आदम अलैहिस्सलाम का वसीला:
अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया और बड़े फ़ख़्र से अपनी ख़िलाफ़त अता फ़रमाने का ऐलान फ़रमाया। फ़रिश्तों से सज्दा करवाया और सज्दा न करने वाले को अल्लाह के दरबार से निकाला गया। जन्नत में रहने का हुक्म दिया और एक पेड़ के फल के सिवा बाक़ी फल खाने की इजाज़त दी, मगर शैतान जो उसका हमेशा का दुशमन था, उसने उसको गुमराह करने की क़सम खायी हुई थी, उसने आदम अलैहिस्सलाम को वही फल खाने पर उभारा जिससे मना किया गया था उस पर आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से निकाल दिया गया। आदम अलैहिस्सलाम अल्लाह की इस नाराज़गी को बर्दाश्त न कर सके और तड़प गए, माफ़ी मांगनी चाही:

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيۡهِ‌ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ‏ ﴿۳۷﴾

आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे सीख लिए तो वह उसने उसपर तवज्जो की। (अल बक़र: 2/37)

यह तरीक़ा अल्लाह को बहुत पसंद है। यह उसने आदम अलैहिस्सलाम को ख़ुद सिखाया था।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا وَاِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ‏ ﴿۲۳﴾

(आदम और हव्वा) दोनों ने कहा, ऐ हमारे परवरदिगार हम अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे हैं अगर तूने हमको माफ़ न किया और हम पर रहम न किया तो हम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाएंगे। (अल आराफ़: 7/23)

मेरा मशवरा है कि आप क़ुरआन के ऊपर दिए गए हवालों का पूरा मतन पढ़ें।

हज़रत युनुस अलैहिस्सलाम : हज़रत युनुस अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी थे। जिन बस्तियों की तरफ़ आपको नबी बना कर भेजा गया था, उन्होंने आपकी दावत को क़ुबूल न किया। यह कशमकश एक मुद्दत तक जारी रही । आख़िरकार युनुस अलैहिस्सलाम ने बेबस होकर अल्लाह के सामने शिकायत कर दी । क़ौम को आख़िरी नोटिस दे दिया कि अगर तुम बाज़ न आये तो तीन दिन के बाद तुम पर अज़ाब आ जाएगा। यह ऐलान करके आप बस्ती से निकल गए, लोगों ने अज़ाब के आसार देखे तो बस्ती से निकल कर रोने और माफ़ी मांगने लगे, अस्तग़फ़ार तक़दीर का रुख़ बदल देती है। अल्लाह की रहमत जोश में आई और अज़ाब टल गया। लोग युनुस अलैहिस्सलाम को ढूँढने के लिए निकले, युनुस अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम से नाराज़ होकर दूसरी जगह चले जाने के लिए रवाना हो गए कि अज़ाब नहीं आया तो वह क़ौम को क्या मुंह दिखलाएंगें, जो पहले ही मज़ाक़ करती है, अब क्या हाल करेंगें । रास्ते में नदी पड़ी, पार करने के लिए नाव पर सवार हुए। नाव तूफ़ान में लपेट में आ गयी। फ़ैसला हुआ कि कोई ग़ुलाम मालिक से भागा हुआ है, जो इस नाव में सवार है । क़ुरआ अंदाज़ी (बहुत से लोगों में से एक का नाम निकालने का तरीक़ा) हुई, बार बार युनुस अलैहिस्सलाम का नाम निकला। उनको पानी में फेंक दिया गया, बाक़ी क़िस्सा इस तरह है:

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾

बेशक युनुस अलैहिस्सलाम पैग़म्बरों में से था । जब वह लदी हुई नाव की तरफ़ भाग गया उन्होंने क़ुरआ डाला और उसे दरया में ढ़केल दिया गया, फिर उसको मछली निगल गयी और उसे पछतावा हुआ। (अस साफ्फ़ात 37/139-142)

فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

तो उसने अंधेरों में पड़े हुए पुकारा और तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ। (अल अंबिया 21/87)

فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

अगर वह इस तरह तस्बीह न करता तो क़यामत तक उसी (मछली) के पेट में रहता। (अस साफ्फ़ात 37/143-144)

ग़ौर फ़रमायें: अल्लाह का नबी अलैहिस्सलाम क़ौम को पकड़ना चाहता है, मगर अल्लाह क़ौम को माफ़ करना चाहता है, नतीजा क्या हुआ, कौन कहता है कि यार को यार की माननी पड़ती है। यह तरीक़ा है माफ़ी मांगने का जब कोई मुसीबत में फँस जाए और जब अल्लाह नाराज़ हो जाये।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्लाम : यह अल्लाह के नबी थे, अल्लाह की राह में आज़माइश पर आज़माइश बर्दाश्त की, बुढ़ापा आ गया, बेटे की ज़रुरत महसूस की, दुआ की:

رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

ऐ मेरे परवरदिगार मुझे एक नेक बेटा अता कर। (अस साफ़्फ़ात 37/100)

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम : यह अल्लाह के नबी थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मोहतरम माँ के ख़ालू थे। मरयम अलैहस्सलाम की ज़िम्मेदारी व परवरिश अल्लाह के हुक्म से उनके ज़िम्मे थी। उनकी अपनी औलाद न थी। बुढ़ापा आ गया, बीवी बाँझपन के अलावा बूढ़ी हो गयीं। मरयम को ज़्यादातर इबादत में मसरूफ़ छोड़ कर हुजरे में बंद करके चले जाते। जब लौटते तो मरयम के पास ताज़ा खाने और मेवे देखते। पूछा कि यह तुम्हारे लिए कहाँ से आये हैं? उन्होंने कहा यह अल्लाह की तरफ़ से हैं और वह जिसको चाहता है, बेहिसाब रिज़्क़ देता है। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के दिमाग में फ़ौरन यह बात आई कि मैं भी एक बेटा मांग लूं, वह मिहराब में इबादत में मसरूफ़ होकर कहने लगे:

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَیْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآىٕكَ رَبِّ شَقِیًّا ۝ وَاِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ وَكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ۝

ऐ मेरे परवरदिगार! बुढ़ापे की वजह से मेरी हड्डियाँ सुस्त सर के बाल सफ़ेद हो गये हैं। तुझसे मांग कर कभी बेनसीब नहीं रहा। मुझे अपने बाद वारिसों का डर है। मेरी बीवी भी बाँझ है, मगर तू मुझको अपने पास से एक बेटा अता फ़रमा दे। (मरयम 19/4-5)

ग़ौर फ़रमाते जायें कि अल्लाह तक पहुँचने के लिए वसीला क्या है। दुसरे अल्फ़ाज़ में दुआ ही वसीला है। अल्लाह ही है कि औलाद अता फ़रमाये, वरना उनके पहले भी तो बुज़ुर्ग थे। दुआएं वही सुनता है, आप भी उससे मांगें। आपकी भी सुनता है औलाद उसके सिवा कोई नहीं दे सकता।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ یَهَبُ لِمَنْ یَّشَآءُ اِنَاثًا وَّیَهَبُ لِمَنْ یَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ یُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا وَیَجْعَلُ مَنْ یَّشَآءُ عَقِیْمًا

आसमानों और ज़मीन की सलतनत अल्लाह ही के लिए है जो चाहे पैदा करता है। जिसको चाहे बेटियां और जिसको चाहे बेटे अता फ़रमाता है या बेटे और बेटियां मिला कर देता है, जिसको चाहे बाँझ ही कर देता है। (अश शूरा 42/49-50)

अगर आपको भी औलाद चाहिए तो इस तरह मांग लें, दर दर की ख़ाक न चाटें। ज़करिया अलैहिस्सलाम की यह दुआ मैंने अपने ऊपर आज़माई है

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً اِنَّكَ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ ۝

ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा, बेशक तू दुआ सुनने वाला है। (आले इमरान 3/38)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम : अब एक मरीज़ का क़िस्सा सुनिए! यह अल्लाह के नबी थे। आज़माइश आ गयी, बीमार पड़ गये, मर्ज़ बहुत ज़्यादा बढ़ गया, औलाद का भी इन्तिक़ाल हो गया, दुनिया की दौलत ख़त्म हो गयी, नौकर चाकर साथ छोड़ गए। एक के सिवा सारी बीवियाँ बेवफ़ाई कर गयीं। सेहत के लिए वसीला चाहिए.........अर्ज़ किया:

اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ

यह कि मुझको बहुत तकलीफ़ है और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम फ़रमाने वाला है। (अल अंबिया 21/83)

मेरी तो दुआ है कि सारी दुनिया के मरीज़ों को शिफ़ा दे या रब, लेकिन अगर आप बीमार हैं तो दर दर की ख़ाक चाटने की बजाये अल्लाह से मुख़ातिब हो जायें। जिस तरह यह मरीज़ मुख़ातिब हुआ, फिर दिल से जो बात निकलती है असर रखती है । यह दुआ ही वसीला है आपकी नियत और आपका ख़ुलूस व यक़ीन ही वसीला है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम : आइये! अब एक मुसाफ़िर का वसीला देखें कि वह किस वसीले से सहारा तलब करता है। यह अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम हैं। फ़िरऔन की पाबंदियों के बावजूद सारी चीज़ों के खालिक़ ने उनको पैदा किया, बल्कि फ़िरऔन ही की गोद में परवरिश पा रहे थे। एक रोज़ दो लड़ने वालों में से एक ने मूसा अलैहिस्सलाम से मदद मांगी, बाज़ न आने वाले को आपने मुक्का मारा, वह मर गया। जिसको छुड़ाया था दुसरे दिन किसी दुसरे से लड़ता हुआ मूसा अलैहिस्सलाम को मदद के लिए पुकारने लगा, मूसा अलैहिस्सलाम यह कहते हुए आगे बढ़े कि तू तो रोज़ ही लड़ता है। वह समझा कि कल की तरह यह मुझे मार देंगे, बोल उठा कि तू मुझे भी क़त्ल करने लगा है, जिस तरह कल क़त्ल किया था । इस तरह क़त्ल का राज़ फ़ाश हो गया। बात फ़िरऔन के दरबार में पहुंची, मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म जारी हो गया । दरबारियों में एक मूसा अलैहिस्सलाम का भला चाहने वाला था, जल्दी से भागा और मूसा अलैहिस्सलाम को दरबार की सारी बात बताते हुए मशवरा दिया कि मिस्र के बाहर ही से कहीं भाग जाओ । मूसा अलैहिस्सलाम भाग गये, ख़ौफ़ भी था और रास्ता भी नहीं मालूम दूर दराज़ का सफ़र करके बेसहारा भूके प्यासे एक कुँवें के पास पेड़ की छाँव में बैठे, लोग पानी भर रहे थे। मूसा अलैहिस्सालम ने दो नौजवान लड़कियों को देखा, जो अपने जानवरों को रोक रोक कर रख रही थीं, वजह पूछी तो उन्होंने अपनी मजबूरी बताई। नेक सीरत जवां मर्दों वाला काम किया, लोगो को हटाया और उन लड़कियों को आगे बुला कर उनके जानवरों को पानी पिला दिया

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّیْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَیَّ مِنْ خَیْرٍ فَقِیْرٌ

तो उसने उनके लिए जानवरों को पानी पिला दिया । फिर साये में लौट गया । तो कहा ऐ मेरे परवरदिगार तू भलाई में से जो कुछ भी मेरे लिए नाज़िल फ़रमा दे, मैं उसी के लिए फ़क़ीर हूँ। (अल क़सस 28/24)

ग़ौर करिए वसीले की तरफ़ दिल से जो बात निकलती है असर रखती है। दुआ ही वसीला है । ठिकाना मिला, बीवी मिली। बुज़ुर्गाना मुहब्बत नसीब हुई और सुकून मिला, ऊपर दी हुई आयतों की तफ़सीर पढ़ें।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम : आइये! एक ऐसे शख़्स का क़िस्सा पढ़ें जिसकी इज्ज़त ख़तरे में है। कोई पूछने वाला नहीं, यह अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम हैं और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे हैं। उन्होंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ ही हिजरत की थी। उन बस्तियों के लिए भेजे गये थे जिनमें बेहयाई की इन्तिहा हो चुकी थी कि मर्द मर्दों से बद-फ़ेली करते थे और फ़ख़्र करते थे। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने एक लम्बे वक़्त तक क़ौम की नाफ़रमानियाँ बर्दाश्त कीं, मगर नतीजा शून्य ही रहा।

अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आई, क़ौम की बदकिरदारी की वजह से अज़ाब के फ़रिशतों को ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में भेजा गया। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम उनको देख कर बहुत घबरा गये। घर में महमानों को लाये तो क़ौम चढ़ आई। वो कहने लगे कि मेहमानों को उनके हवाले कर दिए जायें। लूत अलैहिस्सलाम मन्नत ख़ुशामद करते रहे कि मुझे महमानों के सामने ज़लील न करो, मगर वो अपनी बात पर ही अड़े रहे। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटियों की तरफ़ इशारा किया, मगर मायूस होकर लूत अलैहिस्सलाम ने उनको कहा कि तुम में कोई भी समझदार शख़्स नहीं, जो मेरी बात पर ग़ौर करे । अफ़सोस करते हुए बोले काश!मेरे लिए कोई मज़बूत क़िला होता जहाँ मैं पनाह ले लेता। रात हो गयी यह लोग सहन की दीवार फाँद कर घर में घुस कर दरवाज़ा तोड़ने लगे।हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से मदद मांगी:

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ۝۳۰

ऐ मेरे परवरदिगार इस फ़साद करने वाली क़ौम के ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़रमा। (अल अनकबूत 29/30)

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ

उसके महमान उससे छुपने लगे तो हमने उनकी आँखें ही अंधी कर दीं। (अल क़मर 54/37)

ग़ौर फ़रमाइए! कि कितनी ज़्यादा बेबसी है मगर कुछ बिगाड़ नहीं सकते तो फ़रयाद अल्लाह के पास कर दी, मगर वसीला क्या हुआ? दुआ वसीला है, बात बहुत लम्बी हो रही है, मैं दूसरी मिसालें बस करता हूँ।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिसाल पेश करना ज़रूरी समझता हूँ

हालात यह हैं कि क़ुरैश ने मक्का से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकाल दिया। मदीना पर हमला कर दिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साथियों के साथ ख़तम कर देंगें। बद्र के मैदान में मुक़ाबला हो गया। मुक़ाबला देखिये कि एक तरफ़ एक हज़ार की फ़ौज और दूसरी तरफ़

थे उनके पास दो घोड़े, छः ज़रहें आठ शमशीरें
बदलने आये थे यह लोग दुनया भर की तकदीरें

यह थी कुल तीन सौ तेरह की जमात, हर देखने वाली आँख को हैरत में डाले हुए थे। जानबूझ कर मौत के मुंह में जा रहे हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ेमे में रात भर रो रो कर अल्लाह से दुआएं मांगते रहे, आँसूं बहते रहे, दुआ के अल्फ़ाज़ यह थे:

اللَّهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي اللَّهُمَّ إِنْ تُهْلِكْ هَذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ أَهْلِ الْإِسْلَامِ لَمْ تُعْبَدْ

ऐ मेरे अल्लाह! वह वादा पूरा फ़रमा जो तूने मेरे साथ किया, ऐ मेरे अल्लाह! अगर अहले इस्लाम से यह कुछ नौजवान हलाक हो गए तो तेरी इबादत कोई नहीं करेगा। (सही मुस्लिम 4588)

इलाही अब वह अहदे शब ए मेराज पूरा कर — मुहम्मद से जो वादा था वह आज पूरा कर
अगर अग़यार ने उनको जहाँ से महू कर डाला — न होगा इस जहाँ में कोई तेरा चाहने वाला

अब आप ही फ़ैसला कीजिये कि मुश्किल कुशा कौन है? फिर देखें कि अल्लाह से मांगने के लिए क्या वसीला होना चाहिए।

ख़ौला बिन्ते साअलबा रज़ियल्लाहू अन्हा

अब एक आम औरत की बात सुनें। यह ख़ातून मदीना के क़बीले बनी ख़ज़रज की औरत थी। शौहर ने ग़ुस्से में आकर माँ कह दिया, जो दस्तूर चला आ रहा था उसके मुताबिक़ यह ऐसी तलाक़ कि वापसी नामुमकिन थी। यह ख़ातून नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम रिवाज के मुताबिक़ फ़रमा दिया कि इसको तलाक़ हो गयी है। कायनात में सबसे अफ़ज़ल इंसान से मायूस हो कर वह ख़ातून वहीं बैठीं, अल्लाह के सामने फ़रयादें करती गयीं, उस वक़्त तक उठने का नाम नहीं लिया जब तक कि यह दस्तूर जो चला आ रहा था मंसूख नहीं हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हालत ए वही तारी हो गयी। आयतें नाज़िल हुईं:

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖۗ وَ اللّٰهُ یَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ①
اَلَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَیَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ
الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

अल्लाह ने सुन ली है, उस औरत की बात जो तेरे साथ अपने शौहर के बारे में झगड़ रही है। अल्लाह के सामने फ़रयाद करती जा रही है अल्लाह तुम दोनों के सावाल व जवाब सुन रहा है। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। तुम में से जो अपनी बीवियों को माँ कह दें वह उनकी माएं नहीं हो सकतीं। माएं वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया, वह ज़बान से नापसंदीदा बात और झूट कहते हैं। अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शिश करने वाला है। (अल मुजादला 58/1-2)

सोचिये! कि कितने ज़्यादा नादान हैं वह लोग जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि उनकी नहीं सुनता यह एक ऐसा जुर्म है जो अल्लाह को ग़ज़बनाक करता है। अल्लाह सुनता है, अगर कोई पुकारने वाला हो:

हम तो माइल बाकरम हैं, कोई साइल ही नहीं — राह दिखलायें किसे? राह रवे मंजिल ही नहीं
तरबियत आम तो है, जौहर क़ाबिल ही नहीं — जिससे तामीर हो आदम की, यह वह गिल ही नहीं
कोई क़ाबिल हो तो हम शान कई देते हैं
ढूँढने वालों को दुनया भी नयी देते हैं
हाथ बेज़ोर हैं इल्हाद से दिल ख़ूँगर हैं — उम्मती बाइस ए रुसवाई ए पैग़म्बर हैं
बुत शिकन उठ गये बाक़ी जो हैं बुतगर हैं — था इब्राहिम पिदर और पिसर आज़र हैं
बादा आशाम नए बादा नया ख़ुम भी नए
हरम ए काबा नया बुत भी नए तुम भी नए

अल्लाह का दरवाज़ा मत छोडिये, ऐसे फ़क़ीर बन कर उसकी चौखट थाम लीजिये कि उसको आपके बन्दे होने का यक़ीन हो जाये। नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ادْعُوا اللَّهَ وَأَنْتُمْ مُوقِنُونَ بِالإِجَابَةِ، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لاَ يَسْتَجِيبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ

इस यक़ीन के साथ दुआ मांगों कि वह ज़रूर क़ुबूल होगी, जान लो कि अल्लाह ग़ाफ़िल दिल, खेलने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं करता। (सुनन तिरमिज़ी: 3479)

दुआ इस तरह न मांगो कि वादा और वफ़ा किसी मज़ार से भी बाँध रखी हो और दुआ रस्मी तौर पर अल्लाह से भी मांग रहे हो। अल्लाह को तो अपने बन्दों के साथ बहुत ज़्यादा मुहब्बत है, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

إِنَّ رَبَّكُمْ تَبَارَكَ وَتَعَالَى حَيِيٌّ كَرِيمٌ، يَسْتَحْيِي مِنْ عَبْدِهِ إِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ إِلَيْهِ، أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا

बेशक तुम्हारा रब हयादार करीम है, वह अपने बन्दे से हया करता है कि जब वह हाथ उठाता है तो वह उसके हाथ को उसकी तरफ़ ख़ाली लौटा दे। (सुनन अबू दावूद: 1488)

इस तरह पुकारना सीखो जिस तरह ख़ौला बिन्ते सअलबा ने पुकारा कि अल्लाह तआला ने फ़ौरन वही नाज़िल फ़रमा दी। यह है अल्लाह इल्म वाला और क़रीब कि उसने फ़ौरन क़ानून ही मंसूख कर दिया। आगे से ऐसा करने वालों के लिए सज़ा मुक़र्रर कर दी, सुरह मुजादला पढियें।
मगर एक दिलचस्प बात आपको बता दूं कि यह ख़ातून इस वाक़िये के बाद सहाबा में इज्ज़त की निगाह से देखी जाने लगी कि उसने ऐसी फ़रयाद की, कि अर्श वाला फ़ौरन उस पर महरबान हो गया।
एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु कुछ सहाबा के साथ जा रहे थे कि रास्ते में यह ख़ातून मिली। उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु को रोक लिया, बहुत देर तक सर झुका कर उसकी बातें सुनते रहे। एक साहब ने कहा: "अमीरुल मोमिनीन आपने क़ुरैश के सरदारों को इस बुढ़िया की वजह से इतनी देर रोके रखा।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने फ़रमाया "जानते हो, यह कौन है? यह ख़ौला बिन्ते सअलबा रज़ियल्लाहू अन्हा है। यह वह औरत है जिसकी शिकायत सात आसमानों पर सुनी गयी थी, ख़ुदा की क़सम अगर मुझे यह रात तक भी खड़ा रखती तो मैं खड़ा रहता, सिर्फ़ नमाज़ के वक़्त में चला जाता।"
एक बार यह ख़ातून हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु को रास्ते में मिलीं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने सलाम किया, सलाम का जवाब दे कर कहने लगीं, ऐ उमर रज़ियल्लाहू अन्हु एक वक़्त था जब मैंने तुमको बाज़ार इकाना में देखा था । तुम उस वक़्त उमैर कहलाते थे, लाठी हाथ में लिए बकरियाँ चराते फिरते थे, फिर कुछ देर न गुज़री थी कि तुम उमर कहलाने लगे, फिर एक वक़्त आया कि तुम अमीरुल मोमिनीन कहे जाने लगे । ज़रा उन लोगो के बारे में जो तुम्हारे मुल्क में रहते हैं अल्लाह से डरते रहना । याद रखो, जो अल्लाह की वईद से डरता है, उसके लिए दूर का आदमी भी क़रीबी रिश्तेदार की तरह होता है । जो मौत से डरता है, उसके बारे में यह डर है कि वह उस चीज़ को खो देगा, जिसे बचाना चाहता है । जारूद अब्दी रज़ियल्लाहू अन्हु जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु के साथ थे, बोले "ऐ औरत तूने अमीरुल मोमिनीन के साथ ज़बान दराज़ी की है ।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहू कहने लगे, जानते हो यह कौन है? उनकी बात तो सात आसमानों के ऊपर सुनी गयी थी, उमर रज़ियल्लाहू अन्हु को बहुत ही ध्यान से सुननी चाहिए ।
ग़ौर फ़रमाइए कि उस औरत को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब दे चुके हैं कि कुछ नहीं हो सकता मगर अल्लाह ने फ़रमाया कि تَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ गोया उसकी शिकायत ही वसीला बन गयी । दिल से जो बात निकलती है असर रखती है ।

नेक अमल और दुआ से बढ़ कर कोई वसीला नहीं

अल्लाह ने फ़रमाया:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝

तुम्हारा परवरदिगार फ़रमाता है कि तुम दुआ मुझसे मांगो। मैं तुम्हारी दुआओं को क़ुबूल करूंगा, जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं, उनको जल्दी ज़लील करके जहन्नम में दाख़िल करूंगा। (अल मोमिन 40/60)

आयत साफ़ बता रही है कि दुआ इबादत है जो अल्लाह ही का हक़ है, दुआ न माँगना तकब्बुर है और मुताकब्बिर का ठिकाना जहन्नम है।

अब एक दिलचस्प क़िस्सा बयान करके बात ख़त्म कर रहा हूँ । यह क़िस्सा बुख़ारी शरीफ़ में इस तरह लिखा हुआ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: की तुमसे पहले लोगों में से तीन आदमी चले जा रहे थे कि अचानक उन पर बारिश होने लगी। वो एक गुफ़ा में छुप गए ऊपर से एक बड़ा पत्थर गिरा और गुफ़ा का मुंह बंद हो गया, तो एक ने दुसरे से कहा कि साथियों ख़ुदा की क़सम सच्चाई के सिवा तुमको कोई चीज़ नहीं बचा सकती है, तो तुममें से हर एक को चाहिए कि उस चीज़ के वसीले से दुआ मांगें जिसके बारे में वह जानता हो कि उसने उस अमल में सच्चाई की हो।

पहले शख़्स का वसीला

एक ने कहा ऐ अल्लाह तू ख़ूब जानता है कि मेरा एक मज़दूर था, जिसने एक फ़रक़ (सात सेर) चावल के बदले मेरा काम कर दिया था। वह चला गया और मजदूरी छोड़ गया। मैंने उसको लेकर खेती की, उसकी पैदावार से जानवर ख़रीद लिए, फिर वह मज़दूर मेरे पास मज़दूरी लेने आया तो मैंने उससे कहा कि इन जानवर को ले जाओ। उसने कहा, मज़ाक़ न करो, मेरे तो तुम्हारे ज़िम्मे सिर्फ़ एक फ़रक़ चावल थे। मैंने कहा इनको ले जाओ क्यूंकि यह जानवर इस फ़रक़ चावल की पैदावार में से ही ख़रीदे हैं ,तो वह उनको ले गया। ऐ अल्लाह तू जानता है कि यह काम मैंने सिर्फ़ तेरे ख़ौफ़ से किया था । अब तू हमसे इस पत्थर को हटा दे। वह पत्थर कुछ हट गया।

दुसरे का वसीला

फिर दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह तू ख़ूब जानता है कि मेरे माँ बाप बहुत बूढ़े थे, मैंने रोज़ाना रात को उनके लिए अपनी बकरियों का दूध ले जाता था। एक रात मुझे देर हो गयी, जब मैं पहुंचा तो वो सो चुके थे, मेरे बाल बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे । मैंने अपने तड़पते हुए बच्चो को माँ बाप से पहले इसलिए दूध न पिलाया था कि वह सो रहे थे और उनको जगाना मुझे ठीक नहीं लगा और न उनको छोड़ना गवारा हुआ कि वह उसके न पीने की वजह से कमज़ोर हो जाएंगे, लिहाज़ा मैं रत भर इन्तिज़ार करता रहा। ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम मैंने सिर्फ़ तेरे ख़ौफ़ से किया था तो अब हमसे इस पत्थर को हटा दे, वो पत्थर उनसे थोड़ा सा हट गया और इतना हट गया कि उन्होंने आसमान को देखा।

तीसरे का वसीला

इसके बाद तीसरे ने कहा ऐ अल्लाह तू ख़ूब जानता है कि मेरे चचा की बेटी थी जो मुझे सबसे ज़्यादा पसंद थी। मैंने उससे ख्वाहिश की, वह सौ अशरफियाँ लेने के बिना तय्यार न हुई। मैंने अशरफियाँ पाने के लिए दौड़ धुप की, जब वह मुझे मिल गयी तो मैंने वह अशरफियाँ उसको दे दी, उसने मुझे अपने ऊपर क़ाबू दिया। जब मैंने उसकी दोनों टांगों के बीच बैठ गया तो उसने कहा कि अल्लाह से डर जा और मुहर को नाहक़ (बिना निकाह के) न तोड़ तो मैं उठ खड़ा हुआ। वह सौ अशरफियाँ भी छोड़ दीं, ऐ अल्लाह तू ख़ूब जानता है कि मैंने तुझ से डर कर यह काम छोड़ दिया था तो अब हमसे इस पत्थर को हटा दे। लिहाज़ा अल्लाह ने वह पत्थर पूरी तरह से उन पर से हटा दिया और वह तीनो बाहर निकल गए।**(सही बुख़ारी: 2333, सही मुस्लिम: 6949)**

ग़ौर फ़रमाइए कि नेक अमल जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया जाए वह अमल और ख़ालिस दिल से की गयी दुआ ही सबसे बड़ा वसीला है।

है ज़ात वाहिद इबादत के लायक़ — ज़बान और दिल की शहादत के लायक़
उसी के हैं फ़रमान इताआत के लायक़ — उसी की है सरकार ख़िदमत के लायक़
लगाओ तो लौ अपनी उस से लगाओ
झुकाओ तो सर उसके आगे झुकाओ
उसी पर हमेशा भरोसा करो तुम — उसी के सदा इश्क़ का दम भरो तुम
उसी के ग़ज़ब से डरो गर डरो तुम — उसी की तलब में मरो जब मरो तुम
मुबर्रा है शिरकत से उसकी ख़ुदाई
नहीं उसके आगे किसी की बड़ाई
ख़िरद और इदराक वंजोर हैं वां — मह व महर अदना मज़दूर हैं वां
जहांदार मग़लूब मक़हूर हैं वां — नबी और सिद्दीक़ मजबूर हैं वां
न परिस्तिश है रहबान ओ अहबार की वाँ
न परवा है अबरार ओ अहरार की वाँ

ज़िंदा बुज़ुर्गों से दुआ करवाना : दुआ दुसरे से करवानी भी इसी सूरत में फ़ायदा दे सकती है जब आप ख़ुद भी करें, और अल्लाह की इजाज़त हो। जो बुज़ुर्ग फ़ौत हो जायें, उनके लिए तो हम ज़िन्दो को दुआ करनी चाहिए। ख़ुद दुआ करने और ज़िंदा बुज़ुर्ग से दुआ करवाने का अक़ीदा सहाबा किराम में भी था।
हज़रत अनस रज़ियल्लाहू अन्हु कहते हैं कि जब सूखा पड़ता तो उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहू अन्हु अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के वसीले से बारिश की दुआ करते और कहते :

اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا فَتَسْقِينَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا، قَالَ: فَيُسْقَوْنَ

ऐ हमारे अल्लाह हम तेरी तरफ़ अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वसीला इख़्तियार करते थे तो तू हम पर बारिश करता था, अब तेरी तरफ़ अपने नबी के चचा का वसीला इख़्तियार करते हैं (यानी उनसे दुआ करवाते हैं) तो तू हमको पानी पिला, तो बारिश हो जाती। **(सही बुख़ारी: 1010)**

वरना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र वहां मौजूद थी, उनकी क़ब्र पर उनके वसीले से दुआ मांगने का अक़ीदा सहाबा किराम राज़ियल्लाहू अन्हुम में अगर होता तो क़ब्र पर हाज़िर हो जाते, अब्बास राज़ियल्लाहू अन्हु को साथ तकलीफ़ दे कर जंगल में ले जाने का कोई मक़सद ही न था

हज़रत हुसैन राज़ियल्लाहू अन्हु एक मक़सद ले कर उठे थे, मदीने से मक्का और मक्का से कूफ़ा की तरफ़ चल पड़े। रास्ते ही में वह हादसा हुआ, जिसकी याद हर साल मुस्लिम दुनया में निहायत रंज और ग़म के साथ मनाई जाती है । मालूम यही होता है की फ़ौत शुदा साहिबे क़ब्र के तुफ़ैल और वास्ते से दुआ मांगने का अक़ीदा हमारे रहबर और रहनुमा पीर कामिल इमामें आज़म ने मुसलमानों को दिया ही नहीं। वरना हज़रत हुसैन अपने घराने की दुनया को ऐसे दाव पर न लगाते, बल्कि मदीने में उस क़ब्र से चिमटे रहते जिसमें उनके नाना बुज़ुर्ग, इमामुल अम्बिया, फ़ख्र ए बनी आदम, सरदार ए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमा हैं।

क़ब्र परस्ती की बीमारी मुसलमानों में भी वबा की तरह फ़ैल गयी है। मैंने एक शख़्स को एक मज़ार से निकलते हुए देखा जो बार बार कहता जा रहा था “अच्छा पीर जो तेरी मर्ज़ी” मैंने पुछा कि पीर ने क्या कर दिया है, जवाब मिला, “मुझे इतना अरसा हो गया हाज़िरी देते हुए मगर मेरी मुराद पूरी नहीं करता।” मैंने कहा मियाँ अल्लाह को पुकारो कहने लगा “यह भी अल्लाह ही हैं।” अल्लाह इन नासमझों को हिदायत दे।

नेक अमल क्या है ?

वह अमल नेक क़ुबूल होने वाले हैं जो सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए, अल्लाह के ख़ौफ़ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे क़दम पर किया जाए, फ़रमाने इलाही है:

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

इनको फ़रमा दें कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत चाहते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (आले इमरान 3/31)

गोया पैग़म्बर की पैरवी एक वसीला है । इसी से अल्लाह का इज़्न हासिल हो सकता है, यही इज़्न अल्लाह है :

अक़्ल है तेरी सपर इश्क़ है शमशेर तेरी — मरे दरवेश ख़लाफ़त है जहाँगीरी तेरी
मासिवा अल्लाह के लिए आग है तकबीर तेरी — तू मुसलमान हो तो तक़दीर है तदबीर तेरी

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहां चीज़ है क्या लौह व क़लम तेरे हैं

दुआ की अहमियत

दुआ एक मुकम्मल और पुख़्ता वसीला है, तिरमिज़ी शरीफ़ में लिखा है:

सलमान फ़ारसी राज़ियल्लाहू अन्हु रिवायत हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि तक़दीर को दुआ के बिना कोई चीज़ नहीं बदल सकती और उमर को नेकी के सिवा कोई चीज़ ज़्यादा नहीं कर सकती। **(सुनन तिरमिज़ी: 2139)**

हज़रत अनस रज़ियल्लाहू अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:
दुआ इबादत का मग़ज़ है। **(सुनन तिरमिज़ी: 3372)** ।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स अल्लाह से दुआ न मांगे, अल्लाह उससे नाराज़ हो जाता है। **(सुनन तिरमिज़ी: 3373)**

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝٦٠

तुम्हारा परवरदिगार फ़रमाता है कि तुम दुआ मुझसे मांगो, मैं तुम्हारी दुआ को क़ुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं, उनको जल्दी ज़लील करके जहन्नम में दाख़िल करूंगा।(मोमिन 40/60)

यह आयत वसीले के मौज़ू पर लिखी जा चुकी है।

इरशाद ए बारी तआला है:

क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है? (अज़ ज़ुमर 39/36)

यह सवाल उन लोगों की अक़्ल को दावत ए फ़िकर देता है जो अल्लाह का दरवाज़ा छोड़ कर इधर उधर ठोकरें खाते हैं।
और फ़रमाया :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝١٨٦

जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे बारे में पूछे (तो कह दे कि) मैं क़रीब हूँ, जब दुआ करने वाला दुआ करता है तो मैं क़ुबूल करता हूँ। तो उनको भी चाहिए कि यह मेरे हुक्म को क़ुबूल करें और मुझ पर यक़ीन रखें ताकि भलाई पाएं। (अल बक़रः 2/186)

कुछ दुआएं क़ुबूल क्यूँ नहीं होतीं

यह एक अहम और दिलचस्प सवाल है, इसकी वजह तो कई हो सकती हैं मगर एक यह भी है ख़ुलूस ए दुआ में कमी होती है।अगर इंसान को भरोसा किसी दूसरी ताक़त पर, अपनी ताक़त व क़ाबिलियत पर, कोशिश पर, सिफ़ारिश पर, रिशवत और दुसरे ज़रियों पर हो तो अल्लाह पर भरोसा कम हो जायेगा अल्लाह से रस्मी दुआ मांगेगा, अल्लाह भी उसको उन ज़रियों के हवाले कर देता है। मैंने यह नहीं कहना चाहता कि इन जायज़ ज़रियों को भी इंसान छोड़ दे बल्कि कोशिश ज़रूरी समझे मगर इसको पूरा करवाना अल्लाह पर जाने।

दूसरी वजह मसलहत है : माँ इन्सान से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाली होती है। माँ जब देखती है कि उसका बच्चा किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा है जो उसके लिए नुक़सान दायक है तो उसकी ख़्वाहिश की सख़ती से मुख़ालिफ़त करती है। बच्चा अगर नुक़सान दायक चीज़ को हाथ में ले भी ले तो ज़बरदस्ती छीन लेती है चाहे बच्चा चीख़ चीख़ कर इन्कार करे बल्कि अगर खाने की नुक़सान दायक चीज़ को मुंह में भी डाल ले तो उसके मुंह में उंगली डाल कर निकाल फेंकती है चाहे बच्चा इसको अपने ऊपर ज़ुल्म ही समझे।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस से पता चलता है कि अल्लाह बन्दे पर माँ से भी बढ़ कर मेहरबान है। जब उससे बंदा दुआ करता है और वह बन्दे के लिए फ़ायदेमंद न हो तो उस अता को रोक देता है बल्कि जो नेमत बन्दे के लिए नुक़सान-दायक हो वह दे कर भी छीन लेता है। यह भी उसकी महरबानी ही की निशानी है , जिस तरह बच्चा हर हाल में माँ के दामन को नहीं छोड़ता बल्कि उसकी आग़ोश में महसूस करता है। उसको अपने लिए रहमत जानता है , इसी तरह इन्सान को भी चाहिए कि अल्लाह की रहमत से कभी मायूस न हो , वह तो माँ से भी ज़्यादा महरबान है। जायज़ चीज़ को हासिल करने के लिए कोशिश जारी रखे और दुआ मांगना कभी बंद न करे, इसके लिए फ़ायदेमंद चीज़ अल्लाह अता कर देगा, वरना इसके बदले कोई और चीज़ अता करेगा या इसकी दुआ को क़यामत के लिए ज़खीरा कर देगा। बन्दे और अल्लाह का ताल्लुक़ हमेशा क़ायम रहे, सारी कोशिशों का नतीजा उसकी रहमत पर है। जायज़ कोशिश के बावजूद उसकी निगाह उसके रहमत के दर पर जमी रहे , इसी में सुकून और आफ़ियत है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾

हमने इन्सान को पैदा किया , हम जानते हैं कि उसके दिल में क्या क्या ख़यालात पैदा होते हैं । उसकी शहरग से भी ज़्यादा क़रीब हैं। (क़ाफ़ 50/16)

अफ़सोस उन बेशऊर इंसान की नासमझी पर कि शहरग से क़रीब और दिल के ख़यालात को जान्ने वाले को भुला कर उन लोगों की तरफ़ झुके हैं, जिनके बारे में अल्लाह का फ़रमान है कि वह ज़िन्दगी में बेबस, वफ़ात के बाद बेख़बर और क़यामत के दिन इंकार कर देंगें । लोगो! अल्लाह से मुख़ातिब होना सीखो, वह ताक़त वाला है, मजबूर नहीं, वह शहरग से क़रीब है, दूर नहीं। उसका इल्म पूरा है, दूसरों की तरह बेख़बर नहीं, उसको ज़वाल नहीं, कमज़ोरी और मौत नहीं, बल्कि :

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○

वह ज़िन्दा है, उसके अलावा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, तो उसको ख़ालिस कर के पुकारो और उसी की इबादत करो। सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो जहानों का परवरदिगार है। (अल मोमिन 40/65)

बुतों से तुझको उम्मीदें ख़ुदा से नो उम्मीद मुझे बता तो सही और काफ़िरी क्या है?

फ़रमान ए अली हजवेरी रहमतुल्लाह अलैहि उर्फ़ दाता गंज बख़्श

यह वह बुज़ुर्ग हैं जो ग़ज़नी अफ़ग़ानिस्तान से तबलीग़ के लिए लाहौर तशरीफ़ लाये थे। लाहौर ही में दफ़न हुए, उनके मज़ार पर लोग कई ज़्यादतियां करते हैं और उनसे कई उम्मीदें बांधते हैं । वह अपनी मशहूर किताब "कशफ़ुल महजूब" में अपने आपको मुख़ातिब करके फ़रमाते हैं:
ऐ अली! लोग तुझको गंज बख़्श कहते हैं, मगर तेरे पास किसी को देने के लिए एक कौड़ी भी नहीं, तू इस पर फ़ख़्र न कर क्यूंकि गंज बख़्श और रंज बख़्श सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है।
मगर इस क़ौम का क्या होगा , जो असल दाता को और गंज बख़्श को छोड़ कर उन बुज़ुर्गों की रूहों को दुःख देते हैं और क़यामत के रोज़ अल्लाह उनसे जवाब तलबी करेगा। एक कारोबार की ख़ातिर यह तमाम सिलसिला चला दिया गया। अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैहि क्या खरी खरी बात कहने के आदी थे , और क्या खरी बात कह गये हैं:

जिनको आता नहीं दुनया में कोई फ़न तुम हो नहीं जिस क़ौम को परवाए नशेमन तुम हो!
बिजलियाँ जिसमें हों आसूदा ख़र मन तुम हो बेच खाते हैं जो असलाफ़ के मदफ़न तुम हो!
होंनेकों नाम जो क़ब्रों की तिजारत कर के
क्या न बेचोगे जो मिल जाएँ सनम पत्थर के (जवाबे शिकवा)

दुआ का तरीक़ा

क़ुरआन करीम में अल्लाह करीम ने बहुत से नबियों की दुआएं नक़ल की हैं , जो उन्होंने अलग अलग हालतों में मांगी थीं, ताकि मुसलमान वैसे हालात में उसी तरह मांगें । उनमें से कुछ का ज़िक्र किया जा चूका है। हदीस की किताबों में भी बहुत सी दुआएं लिखी हैं , जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मांगते रहे। अफ़ज़ल यही है कि वह दुआएं याद की जायें और उसी लब ओ लहजे में मांगी जायें, जो क़ुरआन व हदीस में लिखी है लेकिन अगर मजबूरी हो कि उन दुआओं को याद नहीं कर सकते तो दुआ माँगना मत छोड़ दे। अल्लाह हर ज़बान समझता है, दिल के हालत जानता है। ख़ुलूस ए दिल से अपनी ही ज़बान में मांग लें, किसी दुआ में किसी का वसीला या वास्ता डाल कर नहीं बताया गया। दुआ का मफ़हूम व मक़सद समझ कर मांगें, ताकि आपका दिल व दिमाग भी शामिल हो।
दुआ से पहले और बाद नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ना न भूलें , वरना दुआ क़ुबूल न होगी, आख़िर में आमीन भी ज़रूर कह दें , दिल हर क़िस्म के शिर्क से पाक सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हो, वरना अल्लामा इक़बाल के मुताबिक़:

जो मैं सर ब सजदा हुआ कभी तो ज़मीन से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

दुरूद शरीफ़ की अहमियत व फ़ज़ीलत

दुरूद शरीफ़ की अहमियत यूं समझ लें कि दुरूद के बिना कोई नमाज़ , नमाज़ नहीं और कोई दुआ दुआ नहीं, मगर मुसलमानों ने अपनी मर्ज़ी से बहुत से दुरूद बना लिए हैं और उनके नाम ख़ुद रख लिए हैं , जिनका कोई ज़िक्र हदीस की किताबों में नहीं हैं । ऐसे दुरूद अगर आप ख़ुलूस नियत से पढ़ते भी रहेंगे जिस पर मेरे और आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहर न हो तो आप ख़ुद फ़ैसला कर लें कि इस खोटे सिक्के को मार्किट में कौन क़ुबूल करेगा।

हमेशा वह मुस्तनद दुरूद शरीफ़ पढ़ें जो हदीस की किताबों में लिखी हैं , उनमें से एक तो वह है जो आप और मैं नमाज़ में पढ़ते हैं। मेरा मशवरा है कि आप उलझन में न पड़ें और सिर्फ़ यही दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें। कम अज़ कम दिल को यक़ीन तो होगा कि इस पर मुहर ए मदीना है। क़ुरआन मजीद में दुरूद शरीफ़ के लिए इस तरह हुक्म आया है:

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं , ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दोरूद ओ सलाम भेजा करो। (अल अहज़ाब 33/56)

बुख़ारी व मुस्लिम में यह हदीस है:

जनाब अब्दुर रहमान बिन अबी लैला राज़ियल्लाहू अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझसे कआब बिन उजरा राज़ियल्लाहू अन्हु ने मुलाक़ात की और कहा कि मैं तुझको वह चीज़ तोहफ़ा न दूं, जिसको मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है । मैंने कहा, हाँ हमको वह तोहफ़ा ज़रूर दीजि ये, उन्होंने कहा कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि या रसूलुल्लाह ! आप पर और अहले बैत पर हम किस तरह दुरूद भेजें। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इस तरह कहो;

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

ऐ हमारे अल्लाह! मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत भेज जिस तरह तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत भेजी थी, बेशक तू तारीफ़ किया गया पाक है। ऐ हमारे अल्लाह मुहम्मद और आले मुहम्मद पर बरकतें भेज, जिस तरह तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बरकतें भेजी थीं , बेशक तू तारीफ़ किया गया पाक है। **(सही बुख़ारी: 3370, सही मुस्लिम: 908)**

दुरूद का मक़ाम

मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस हज़रत अबू हुरैरा राज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत की गयी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझ पर जो शख़्स एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ भेजेगा , अल्लाह उस पर दुरूद दस मर्तबा रहमत नाज़िल करेगा।
आप ही फ़ैसला करें कि हम मन घड़न्त दुरूद पढ़ कर अपना वक़्त और सवाब क्यूँ बर्बाद करें । जिसकी सनद नहीं, वह बातिल हैं, असल दुरूद हमेशा पढ़ते रहना चाहिए, दुरूद शरीफ़ दुआ है।

दुआ का वक़्त

वैसे तो दुआ हर वक़्त मांगते रहना ही अच्छा है मगर कुछ मौक़े हदीस की किताबों में मिलते हैं जिनमें सिर्फ़ एक का ज़िक्र मैं यहाँ कर देता हूँ।
तिरमिज़ी शरीफ़ में लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे । अबू बक्र और उमर

रज़ियल्लाहू अन्हुमा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। मैं नमाज़ के बाद बैठा तो अल्लाह की तारीफ़ की फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजा , अपने लिए दुआ की। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मांग, दिया जायेगा, मांग दिया जायेगा।
पता यह चला कि नमाज़ दुआ के लि ए बेहतरीन वक़्त है, नमाज़ मोमिन की मेराज है। इस वक़्त मोमिन एक तरफ़ ध्यान लगा कर अल्लाह से बिना किसी वास्ते से बातें करता है। कोई वसीले की ज़रुरत नहीं है।

वास्ता न तुफ़ैल: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ ही सब कुछ है , ऐसे ही दुआएं मांगने वाले लोगो के लिए अल्लाह ने फ़रमाया:

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّـَٔاتِهِمْ فِىٓ أَصْحَٰبِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِى كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

यही लोग हैं, जिनके आमाल में से अच्छे हम क़ुबूल करते हैं और उनकी बुराइयों को माफ़ करते हैं और वह जन्नत वाले हैं। (अल अहक़ाफ़ 45/16)

दुआ इबादत है और सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है , दुआ न मांगने पर अल्लाह नाराज़ होता है। दुआ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़रमाबरदारी से बढ़ कर कोई वसीला नहीं। इसके अलावा सभी काम मुशरिकाना है और शिर्क ज़ुल्म है।

وَإِذْ قَالَ لُقْمَٰنُ لِابْنِهِۦ وَهُوَ يَعِظُهُۥ يَٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया था कि ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, बेशक शिर्क सब ज़ुल्मों से बड़ा ज़ुल्म है। (लुक़मान 31/13)

इसी मक़ाम पर अल्लाह करीम ने माँ- बाप का हक़ बयान फ़रमाते हुए माँ का मक़ाम बयान फ़रमाया है लेकिन हद ओ हिसाब, अहसान करने वाली माँ भी अगर शिर्क के लिए कहे तो अल्लाह ने हुक्म दे दिया है कि उसकी फ़रमाबरदारी मत करो, लेकिन दुनया के कामों में उसकी ख़िदमत करते रहो॥

शिर्क आमाल को खा जाता है

नबियों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़ कर कोई शख़्सियत अल्लाह को अज़ीज़ नहीं है। मगर शिर्क के मामले में जो फ़रमान बारी तआला नाज़िल हुआ है, उसे देख लें:

وَلَقَدْ أُوحِىَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَٰسِرِينَ ﴿٦٥﴾

तेरी तरफ़ और तुझसे पहले लोगों की तरफ़ हमने वही की है कि अगर तूने अल्लाह के साथ शिर्क किया तो तुम्हारे सारे आमाल बर्बाद कर दूंगा और तुम ज़ियाकारों में से हो जाओगे (अज़ ज़ुमर 39/65)

एक बात दिमाग में बैठा लें कि अल्लाह को किसी क़ौम या शख़्स से मुहब्बत नहीं है , अल्लाह को अपने क़ानून से मुहब्बत है। जो उसके क़ानून को माने वह उसको प्यारा है और जो न माने वह मरदूद है । क़ुरआन पाक पारह 7 सुरह अनआम रुकूअ 10 में अल्लाह ने इब्राहीम , इस्हाक़, याक़ूब, नूह, सुलेमान,

अय्यूब, युसुफ़, मूसा, हारुन, ज़करय, यहया, ईसा, इलयास, इस्माईल, युनुस और लूत अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि इनको दुसरे लोगों पर फ़ज़ीलत बख़्शी गयी थी, मगर इन लोगो के बारे में भी फ़रमाया:

وَمِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

इनके बाप दादों, बेटों और भाइयों में से हमने पसंद किये थे और उनको सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत की थी। यह हिदायत अल्लाह ही की तरफ़ से है जिसको चाहता है , अपने बन्दों में से हिदायत फ़रमाता है, अगर यह शिर्क करते तो उनके सारे आमाल बर्बाद हो जाते। (अल अनआम 6/87-88)

गोया शिर्क आमाल ए सालेह को खा जाता है।

शिर्क की माफ़ी नहीं

फ़रमान ए इलाही है:

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ۝

बेशक अल्लाह इस बात को कभी माफ़ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शरीक बनाया जाए , इसके अलावा दुसरे गुनाह जो वह चाहेगा माफ़ कर देगा , जिसने अल्लाह के साथ शरीक बनाया, उसने अल्लाह पर बहुत बड़ा आरोप घड़ा। (अन निसा 4/48)

फिर फ़रमाया:

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝

बेशक अल्लाह इस बात को माफ़ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शरीक बनाया जाए, इसके अलावा दुसरे गुनाह जो वह चाहेगा माफ़ फ़रमा देगा, जिसने अल्लाह के साथ शरीक बनाया, वो दूर गुमराही में जा गिरा। (अन निसा 4/116)

शिर्क इतना ज़्यादा ख़तरनाक गुनाह है कि इसके अलावा बाक़ी का फ़ैसला वक़्त आने पर होगा मगर शिर्क का फ़ैसला किया जा चूका है कि उसकी माफ़ी नहीं है। अफ़सोस की बात यह है कि बाक़ी गुनाह करने वाले से उम्मीद की जा सकती है कि किसी वक़्त तौबा कर लेगा क्यूंकि गुनाह को हर शख़्स गुनाह ही कहता है मगर मुशरिक और बिदअती सारी ज़िन्दगी इस ख़ुश फ़हमी में रहता है कि वह नेकी कर रहा है, इस वजह से उसे तौबा की ज़रुरत ही महसूस नहीं होती। वह अपने आपको मकड़े की तरह ख़यालात का ताना बाना बना कर मज़बूत क़िले में जानता है मगर हक़ीक़त का एक ही झटका सब ताना बाना बिखेर कर रख देता है।

शिर्क सारी बुराइयों की जड़ है

मुशरिक का यह अक़ीदा पक्का होता है कि अल्लाह से बात मनवाने के लिए सिफ़ारिश काम कर सकती है। मकड़े की तरह वह सारी उमर इसी गलत फ़हमी में रहता है कि फ़ौ त शुदा बुज़ुर्ग सिफ़ारिश करके उसे निजात दिला सकते हैं और उसकी बिगड़ी बना सकते हैं। वह अपने ख़याल के मुताबिक़ बुज़ुर्गों की रूहों को अपने हक़ में राज़ी रखने के लिए उनके नाम की नज़र ओ नियाज़ और उरस भण्डारे पर हाज़िरी को काफ़ी समझते हुए उमर खपा देता है । बाक़ी गुनाहों से वह अपने आपको आज़ाद समझता है , गोया शिर्क सारे गुनाहों कि जड़ है । जैसे एक बाज़ारी औरत अप ने गुनाह की माफ़ी के लिए मस्जिद में कभी नहीं जाती बल्कि वह पीर के मज़ार पर चढ़ावा देना काफ़ी ख़याल करती है। इसी गलत फ़हमी में वह उमर गुज़ार देती है, अख़ बारों में अगवा और लुट जाने की ख़बरें कई बार देखी जाती हैं, यह सब शिर्क ही का नतीजा है।

शिर्क क्यूँ?

न भूलियें कि शैतान हमारा हमेशा से और हमेशा के लिए दुशमन है , इसकी हमेशा कोशिश होती है कि ज़्यादा से ज़्यादा इंसान इसका शिकार हों जो इंसान ज़रा अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल होता है , उस पर शैतान क़ब्ज़ा कर लेता है।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

और जो शख़्स रहमान के ज़िक्र से लापरवाही बरतता है, हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं और वो उसका साथी बन जाता है। यह शैतान ऐसे लोगों को सीधे रास्ते पर आने से रोकते हैं और वे अपनी जगह यह समझते हैं कि हम ठीक रास्ते पर हैं। आख़िरकार जब यह शख़स हमारे यहाँ पहुंचेगा तो अपने शैतान से कहेगा, काश मेरे और तेरे बीच पूरब- पश्चिम की दूरी होती, तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला। (अज़ ज़ुख़रुफ़ 43/36-38)

उधर अल्लाह ने हक़ की तलाश का जज़्बा हर दिल में रख दिया है, इंसान हमेशा हक़ की तलाश में रहता है। शैतान इंसान के इस जज़्बे से पूरा पूरा फ़ायदा उठाने के लिए अपनी कोशिश इंसान को बेइल्म रखने पर लगाता है ताकि वह हक़ और बातिल में फ़र्क न कर सके और फिर ऊपर आयत के मुताबिक़ बातिल को उसके सामने इस तरह पेश करता है कि इंसान इसी को हक़ समझ कर इसी पर अपनी ज़िन्दगी ख़पा देता है और उसे कभी भी तौबा नसीब नहीं होती , आख़िरकार मौत का झटका आते ही हक़ीक़त उसके सामने खुल जाती है, वह दिन आ जाता है कि:

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

जिस दिन ज़ालिमों को उनका मजबूरी पेश करना कुछ भी फ़ायदा न देगा और उनपर लानत पड़ेगी और बदतरीन ठिकाना उनके हिस्से में आएगा। (अल मोमिन 40/52)

शैतान बहुत अच्छी तरह से जानता है कि शिर्क से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं क्यूंकि शिर्क की माफ़ी नहीं , यही वजह है कि हर दौर में ज़्यादा से ज़्यादा लोग शिर्क में फँसें हुए दिखाई देते हैं। इसकी बहुत सी फ़ौज

उसकी मदद के लिए तय्यार रहते हैं, वो उल्मा, पीर और दरवेश का रूप धारण कर इंसान पर हमला करते हैं। अल्लाह ने हमको इस तरह आगाह किया है:

اَلَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰهُمُ الۡکِتٰبَ یَعۡرِفُوۡنَهٗ کَمَا یَعۡرِفُوۡنَ اَبۡنَآءَهُمۡ ؕ وَاِنَّ فَرِیۡقًا مِّنۡهُمۡ لَیَکۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ وَهُمۡ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۴۶﴾

जिन लोगों को किताब दी गयी है , वह इसको यूं पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को मगर उनमें एक ऐसा गिरोह भी है जो हक़ को जान बूझ कर छुपाता है। (अल बक़रः 2/146)

यह हैं गंदुम नुमा जौ फ़रोश मौलवी, पीर और दरवेश जिनके आसतानों की रौनक़ और उनकी ताक़त का ज़रिया भी हम ही हैं। इस हक़ को छुपाने के लिए वह मुआवज़ा भी हम ही से वसूल करते हैं:
फ़रमाने इलाही पढ़िए:

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّ کَثِیۡرًا مِّنَ الۡاَحۡبَارِ وَالرُّهۡبَانِ لَیَاۡکُلُوۡنَ اَمۡوَالَ النَّاسِ بِالۡبَاطِلِ وَیَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیۡنَ یَکۡنِزُوۡنَ الذَّهَبَ وَالۡفِضَّةَ وَلَا یُنۡفِقُوۡنَهَا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِیۡمٍ ﴿۳۴﴾

ऐ ईमान वालों! बेशक तुम्हारे आलिमों और पीरों में से ज़्यादातर ऐसे हैं जो लोगों के माल गलत तरीकों से खा जाते हैं और अल्लाह की राह से भी रोकते हैं। (अत तौबा 9/34)

हम जाहिल इतने हैं कि अपना सबकुछ लुटा कर भी हम इस गलतफ़हमी में रहते हैं कि वो हम पर बहुत बड़ा अहसान कर रहे हैं। यह लोग हमारा ही ख़ून चू स कर हम पर ही अपनी बड़ाई जताते हैं , हमे इतना ज़्यादा धोके में रखते हैं कि हम उनके लिए लड़ने मरने पर तय्यार रहते हैं।

ख़ुदावन्दे यह तेरे सादा बन्दे किधर जाएं
कि सुल्तानी भी अयारीहै दरवेशी भी अयारी

وَاِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ تَعۡرِفُ فِیۡ وُجُوۡهِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوا الۡمُنۡکَرَ ؕ یَکَادُوۡنَ یَسۡطُوۡنَ بِالَّذِیۡنَ یَتۡلُوۡنَ عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِنَا ؕ

और जब उनको हमारी साफ़-साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो तुम देखते हो कि हक़ का इन्कार करने वालों के चेहरे बिगड़ने लगते हैं और ऐसा लगता है कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। (अल हज 22/72)

आपने बहुत बार ऐसे टकराव देखे होंगे , यह सब उन धोकेबाज़ों का किया धरा हो ता है। लोग इनको पसंद करते हैं क्यूंकि यह आसान मज़हब और मतलब का प्रचार करते हैं जो लोगों को पसंद होता है , वह इसी को हक़ समझ कर इसी पर अपनी ज़िन्दगी ख़पा देते हैं और फिर:

وَاِذَا قِیۡلَ لَهُمُ اتَّبِعُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ قَالُوۡا بَلۡ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلۡفَیۡنَا عَلَیۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوۡ کَانَ اٰبَآؤُهُمۡ لَا یَعۡقِلُوۡنَ شَیۡـًٔا وَّلَا یَهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۷۰﴾

जब उनको कहा जाता है कि उस चीज़ की पैरवी करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो कहते हैं कि हम तो उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादो को पाया है , क्या अगर इनके बाप दादा बेसमझ और रास्ते से भटके हुए हों? (अल बक़रः 2/170)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۚ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝

जब इनको कहा जाता है कि तुम अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ की तरफ़ और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ आओ तो कहते हैं कि जिस पर हमने अपने बाप दादो को पाया, हमारे लिए वही काफ़ी है, क्या अगर इनके बाप दादा जाहिल हों और उनको हिदायत भी नसीब न हो । (अल मायदा 5/104)

याद रखें कि यह धोके देने वाला शैतान और उसके चेले नबियों के मोजिज़ात और औलियाँ किराम की करामत का हवाला दे कर यह बताते हैं कि इस कायनात में अल्लाह वाले यूं भी कर सकते हैं क्यूंकि उनको अल्लाह ने इख़्तियार दे रखा है । आइये हम मोजिज़ा और करामत की हक़ीक़त पर क़ुरआन की रौशनी में ग़ौर कर लें।

मोजिज़ा व करामत

हमें धोका देने के लिए जो मोजिज़ात व करामात सुनाये जाते हैं, उनमें से कई तो मन-घड़ंत और हवाई होते हैं लेकिन अगर सच भी हों तो आप एक ही बात याद रखें कि मोजिज़ा नबी का और करामत वली का अपना ख़ुद का कारनामा नहीं होता बल्कि यह मुकम्मल तौर पर अल्लाह का कारनामा होता है, इसको दिखाने में बुज़ुर्ग बेबस होता है।

जहांदार मग़लूब व मक़हूर हैं वाँ नबी और सिद्दीक़ मजबूर हैं वाँ

मिसाल के तौर पर देखिये कि कुफ़्फ़ार ने बार बार मोजिज़ात तलब किये और पेश न करने की सूरत में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐतराज़ किया, उनका जवाब अल्लाह ने यूं इरशाद फ़रमाया:

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝

आपसे पहले भी हमने रसूल भेजे थे, उनकी बीवियाँ और औलादें भी थीं, किसी नबी के बस में कभी यह न हुआ कि बिना अल्लाह की इजाज़त के कोई निशानी (मोजिज़ा) ले आये, हर वादे के लिए एक किताब है। (अर रआद 13/38)

फिर फ़रमाया कि यह कोई नया ऐतराज़ नहीं है, बल्कि क़ौमे नूह, आद व समूद का ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद हुआ कि उन्होंने भी अपने नबियों पर यह ऐतराज़ किया था।

قَالُوٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ قَالَتْ لَهُمْ
رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

उन्होंने कहा कि तुम तो हमारी तरह के इंसान ही हो , तुम्हारा तो यह इरादा है कि तुम हमको उनकी इबादत करने से रोको जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते चले आये हैं, तो हमारे पास कोई साफ़ साफ़ दलील लाओ। उनके रसूलों ने उनसे कहा कि हम तुम्हारी तरह इंसान ही हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है नवाज़ता है और हमारे बस की बात नहीं कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई दलील ले आयें और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (इब्राहीम 14/10-11)

अगर आप अब भी बात नहीं समझे तो लीजिये! आपके सामने सिर्फ़ दो मिसालें पेश करता हूँ:

मूसा अलैहिस्सलाम का मिस्र से निकलने और मदयन पहुँचने का क़िस्सा पीछे बयान किया जा चुका है , वह क़िस्सा यहाँ ख़त्म हुआ था कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से मदद चाही थी तो उन दोनों जवान लड़कियों ने पानी पिलाने का क़िस्सा बाप से बयान किया , मशवरा दिया कि उसको मुलाज़िम रख लिया जाए कि हमारा कोई भाई नहीं , उनमें से एक को बाप ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ भेजा । यह बाप अल्लाह के एक नेक बन्दे थे जो कमज़ोर और आँखों से महरूम हो चुके थे।
मूसा अलैहिस्सलाम और बच्चियों के वालिद के बीच समझौता हुआ जिसकी बिना पर उन्होंने एक बेटी को उनसे ब्याह दिया, समझौते की मुद्दत ख़त्म होने पर मूसा अलैहिस्सलाम अपनी बीवी को लेकर अपने वतन मिस्र की तरफ़ चल दिए।
जंगल के रास्ते में और सर्दी का मौसम था, रात का वक़्त और रास्ता भी नहीं मालूम, मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी अहलिया मोहतरमा से फ़रमाया कि पहाड़ पर मुझे आग दिखाई दी है । मैं वहाँ जाता हूँ ताकि कोई अंगारा लाऊँ जिसे आप ताप सकें, शायद वहाँ मुझको कोई रास्ता बताने वाला भी मिल जाए, जब वहाँ पहुँचें तो आवाज़ आई:

يٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى
اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे जहानवालों का मालिक। और अपनी लाठी फ़ेंक दे, ज्यों ही मूसा ने देखा कि वो लाठी साँप की तरह बल खा रही है , तो वो पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर भी न देखा । अल्लाह ने पुकार कर फ़रमाया मूसा, पलट आ और डर मत, तू बिल्कुल महफ़ूज़ है। (अल क़सस 28/30-31)

दिलचस्प बात यह है कि यह डंडा एक अरसे से मूसा अलिहिस्सलाम के हाथ में था, डालने का हुक्म देने से पहले अल्लाह ने डंडे की कैफ़ियत का यक़ीन दिलाने के लिए और दिल से डर निकलवाने के लिए पूछा था:

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ
اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾

ऐ मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? मूसा ने जवाब दिया , यह मेरी लाठी है , इसपर टेक लगाकर चलता हूँ, इससे अपनी बकरियाँ के लिये पत्ते झाड़ता हूँ और भी बहुत से काम हैं जो इससे लेता हूँ। कहा, फेंक दे इसको मूसा! (ताहा 20/17-19)

क़ुरआन की इबारत बता रही है कि मूसा अलिहिस्सलाम के वहम ओ गुमान में भी न था कि इस लाठी की सूरत व सीरत यूँ भी बदल सकती है । अगर इनके दिल में ऐसा कोई ख़याल पहले से होता तो वह कभी भी न डरते फिर देखिये कि मूसा अलैहिस्सलाम फ़ि रऔन के दरबार में अल्लाह का पैग़ाम सुनाने के लिए जा खड़े हुए। इसी लाठी से जब अल्लाह ने चाहा तो कई बार मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ , फ़िरऔन और उसके साथियों ने इसे जादू कहा , मुक़ाबले के लिए जादूगर इकठ्ठे कर लिए । जादूगर आये और जादू दिखाया , उन्होंने छोटी छोटी रस्सियों और लकड़ियों से साँप बना कर दिखाए, जिसका ज़िक्र क़ुरआन ने यूँ फ़रमाया:

فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ؕ

जब जादूगरों की लाठियाँ और रस्सियाँ उनके जादू की वजह से दौड़ती हुई दिखाई देने लगीं तो मूसा अलैहिस्सलाम डर गए और डर को अपने दिल में छुपाया तो हमने कहा ऐ मूसा! मत डरो, तुम ही ग़ालिब रहोगे, जो कुछ तुम्हारे दाहिने हाथ में है, उसे डाल दो। यह उन चीज़ों को निगल जायेगा जो उन्होंने बनाई हैं। (ताहा 20/66-69)

ग़ौर फ़रमाइए! मूसा अलैहिस्सलाम भी वही लाठी भी वही जिसका तजुर्बा कई बार पहले कराया जा चूका है। मगर हर बार इसको साँप में बदलना अपने बस में नहीं और न ही यह यक़ीन है कि मेरे डालने से यह साँप बन सकता है वरना डरने की ज़रुरत न थी बल्कि चुपके से डाल दिया होता और यह सब कुछ निगल गया होता मगर यह काम अल्लाह का है वरना मूसा अलैहिस्सलाम तो दिल में डर महसूस कर रहे थे। अब एक मिसाल और लीजिये , यह हैं सरदार ए दो जहाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि "बाद अज़ ख़ुदा तुई क़िस्सा मुख़्तसर"
कुफ्फ़ार की मांग देखिये और आप का जवाब देखिये, कुफ्फ़ार मोजिज़ात की मांग करते हैं:

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ
خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ
مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا
بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾

उन्होंने कहा कि हम तुझ पर ईमान नहीं लायेंगे जब तक तू हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा न जारी कर दें या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ हों, उनके बीच से नहर बहती हो या तू आसमान को टुकड़े टुकड़े करके हमारे ऊपर गिरा दे जैसाकि तेरा दावा है या अल्लाह और फरिश्तों को रू-ब-रू हमारे सामने ले आए

या तेरे लिये सोने का एक घर बन जाए या तू आसमान पर चढ़ जाए और तेरे चढ़ने का भी हम यक़ीन न करेंगे जब तक कि तू हमारे ऊपर एक ऐसी तहरीर न उतार लाए जिसे हम पढ़ें। ऐ नबी! उनसे कहो, पाक है मेरा परवरदिगार क्या मैं एक पैग़ाम लाने वाले इंसान के सिवा और भी कुछ हूँ? (बनी इस्राईल 17/90-93)

मोजिज़ा सिर्फ़ अल्लाह का काम है, जब अल्लाह की इजाज़त हुई तो मोजिज़ात मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़ाहिर भी हुए, बद्र के मैदान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मुठ्ठी भर कर रेत हवा में बिखेर दी जो कुफ्फ़ार की आँखों में पड़ी। इसके विपरीत वह वक़्त भी याद रखिये जब ताइफ़ के लड़को ने मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गुस्ताख़ाना तौर पर सताया , ज़ख़्मी कर दिया और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थक कर बैठना चाहते तो वह पत्थर मार कर आगे चलने पर मजबूर कर देते थे। अगर बस में होता तो एक मुठ्ठी रेत हवा में बिखेर देने में कोई हर्ज नहीं था मगर मोजिज़ा सिर्फ़ अल्लाह का काम है। जनाब शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी एक किताब "तोहफ़तुल मोहिदीन" में लिखते हैं:

जानना चाहिए कि औलिया की करामत बर-हक़ है। इसका इन्कार करने वाला इमानी हलावत से महरूम है, जो बात खारिक़े आदत (क़ुदरती क़ायदे को तोड़ने वाला) नबियों से ज़ाहिर होती है, उसे शरियत में मोजिज़ा कहते हैं और अगर दुसरे बुज़ुर्गों से ज़ाहिर हो तो उसका नाम करामत रखते हैं मगर इरादा दोनों का एक ही है यानी अल्लाह का क़ुर्ब लेकिन याद रहे कि मोजिज़ा और करामत का ज़ाहिर करना बुज़ुर्गों के हाथ में नहीं होता है, बल्कि अल्लाह के इख़्तियार और क़ुदरत में है , बुज़ुर्ग अपनी ज़ात में इसकी ताक़त नहीं रखते।

इख़्तिसार की ख़ातिर बस करता हूँ, मक़सद यह ज़हन नशीन करवाना है कि धोका देने वाला आपको धोका न दे जाए।

अपना जवाब ख़ुद देना होगा

इस गलत फ़हमी में कोई न रहे कि कोई किसी का बोझ उठा लेगा या कोई ज़िम्मेदारी ले कर छुड़ा लेगा॥

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا ٱهْتَدَيْتُمْ

ऐ ईमान वालों! अपनी जानों की ज़िम्मेदारी तुम पर ही है अगर तुम हिदायत पाओ तो किसी का गुमराह होना तुमको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता॥ (अल मायदा 5/105)

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓ أُو۟لَٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ ٱلْكِتَٰبِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمْ
رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوٓا۟ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ قَالُوا۟ ضَلُّوا۟ عَنَّا وَشَهِدُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟
كَٰفِرِينَ ٣٧ قَالَ ٱدْخُلُوا۟ فِىٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ فِى ٱلنَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ
حَتَّىٰٓ إِذَا ٱدَّارَكُوا۟ فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَىٰهُمْ لِأُولَىٰهُمْ رَبَّنَا هَٰٓؤُلَآءِ أَضَلُّونَا فَـَٔاتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ ٱلنَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ٣٨ وَقَالَتْ أُولَىٰهُمْ لِأُخْرَىٰهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْسِبُونَ ٣٩

आख़िर उससे बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो बिल्कुल झूठी बातें गढ़कर अल्लाह से जोड़े या अल्लाह की सच्ची आयतों को झुठलाए? ऐसे लोग अपनी नसीब के लिखे के मुताबिक़ अपना हिस्सा पाते रहेंगे , यहाँ तक कि वो घड़ी आ जाएगी जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उनकी रूह निकालने के लिये पहुँचेंगे। उस वक़्त वे उनसे पूँछेंगे कि बताओ अब कहाँ है तुम्हारे वे माबूद जिनको तुम अल्लाह के बजाए पुकारते थे? वे कहेंगे कि सब हमसे गुम हो गए और वे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि हम हक़ीक़त में हक़ के इनकारी थे। अल्लाह फ़रमाएगा जाओ तुम भी उसी जहन्नम में चले जाओ जिसमें तुमसे पहले गुज़रे हुए जिन्न और इंसानों के गिरोह जा चुके हैं। हर गिरहो जब जहन्नम में दाख़िल होगा तो अपने अगले गिरोह पर लानत करता हुआ दाख़िल होगा, यहाँ तक कि जब सब वहाँ जमा हो जाएँगे तो हर बाद वाला गिरोह पहले गिरोह के बारे में कहेगा कि ऐ रब! ये लोग थे जिन्होंने हमें गुमराह किया, इसलिये इन्हें आग का दोहरा अज़ाब दे। जवाब में कहा जाएगा, हर एक के लिए दोहरा ही अज़ाब है मगर तुम जानते नहीं हो । और पहला गिरोह दुसरे गिरोह से कहेगा कि (अगर हम इलज़ाम के क़ाबिल थे) तो तुम्हीं को हम पर कौन सी बड़ाई हासिल थी, अब अपनी कमाई के नतीजे में अज़ाब का मज़ा चखो। (अल आराफ़ 7/37-39)

ग़ौर फ़रमाइए कि कोई बहाना काम न आएगा , गुमराह करने वाला तो गिरफ़्तार ए अज़ाब होगा मगर उसका फ़रमाबरदार किसी हीले बहाने से बच न सकेगा। कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, पीरी मुरीदी के यह दावे धरे के धरे रह जाएँगे।

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ
لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

जिस वक़्त पेशवा लोग अपने ताबेदारों से बेज़ार हो जाएँगे और अज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे और सारे रिश्ते नाते टूट जाएँगे। और ताबेदार लोग कहेंगे कि काश हम दुनिया की तरफ़ दोबारा जायें तो हम भी उनसे ऐसे ही बेज़ार हो जाएँ जैसे यह हमसे हैं इसी तरह अल्लाह तआला उन्हें उनके आमाल दिखायेगा उनको हसरत दिलाने को, यह हरगिज़ जहन्नम से न निकलेंगे। (अल बक़रः 2/166-167)

आज इन लोगो की दुकानों को चमकाने वाले लोग जो इन झूठे दावेदारों की तरफ़दारी में ज़िन्दाबाद के नारे लगाते फिर रहे हैं, ख़बरदार रहें कि वह दिन बहुत ही सख़्त होगा:

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾ يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا
خَلِيلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي
اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾

और उस दिन ज़ालिम इन्सान अपने हाथों को चबा चबा कर कहेगा, काश मैंने रसूल की राह को अपनाया होता, हाय मेरी कमबख़्ती! काश मैंने फ़ुलाँ शख़्स को दोस्त न बनाया होता। उसके बहकावे में आकर मैंने वो नसीहत न मानी जो मेरे पास आई थी , शैतान इन्सान के हक़ में बड़ा ही बेवफ़ा निकला । और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम के लोगों ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। (अल फ़ुरक़ान 25/27-30)

अल्लाह के फ़रमानो और नबी को अहकाम को पीछे डाल कर अंधी तक़लीद करने वालों के इशारों पर जान निछावर करने वाले आज ही अपने अन्जाम पर निगाह डाल दें।

वरना: तब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गयी खेत
क़ुरआन ने इस ख़ौफ़नाक वक़्त की तस्वीर यूं खींची है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝ ١٢

काश, तुम देखो वो वक़्त जब ये मुजरिम सर झुकाए अपने रब के सामने खड़े होंगे (उस वक़्त ये कह रहे होंगे) ऐ हमारे रब, हमने ख़ूब देख लिया और सुन लिया, अब हमें वापस भेज दे, ताकि हम अच्छे काम करें, हमें अब यक़ीन आ गया है। (अस सजदा 32/12)

न भूलिए कि इस दुनिया में सिर्फ़ एक ही बार आना है, मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक इरशाद का तर्जुमा मौलान हाली रहमतुल्लाह अलैह ने यूँ किया है:

ग़नीमत है सेहत अलालत से पहले — फ़राग़त मशाग़िल की कसरत से पहले
इक़ामत मुसाफ़िर की रहलत से पहले — जवानी बुढ़ापे की ज़हमत से पहले
फ़क़ीरी से पहले ग़नीमत है दौलत
जो करना है कर लो कि थोड़ी है मोहलत

वरना मायूसी में ग़म व ग़ुस्सा किसी काम न आ सकेगा:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝ ٢٩

वहाँ हक़ के ये इन्कारी कहेंगे कि ऐ हमारे रब, ज़रा हमें दिखा दे उन जिन्नों और इन्सानों को जिन्होंने हमें गुमराह किया था, हम उन्हें पाँव तले रौंद डालेंगे ताकि वे अच्छी तरह बेइज़्ज़त और रुसवा हों। (हाम मीम सजदा 41/29)

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝ ٦٦ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ
كُبَرَاۗءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝ ٦٧ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۝ ٦٨

उस दिन उनके चेहरे आग पर उलट पलट किये जाएँगे, उस वक़्त वे कहेंगे कि काश हमने अल्लाह और रसूल की फ़रमाँबरदारी की होती। और कहेंगे, ऐ हमारे रब हमने अपने सरदारों और बड़ो का कहा माना और उन्होंने हमें सीधे रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे रब इनको दोहरा अज़ाब दे और इनपर सख़्त लानत कर। (अल अहज़ाब 33/66-68)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِۨ الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝ ٣١ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

بَعۡدَ اِذۡ جَآءَکُمۡ بَلۡ کُنۡتُمۡ مُّجۡرِمِیۡنَ ﴿۳۲﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡا لِلَّذِیۡنَ اسۡتَکۡبَرُوۡا بَلۡ مَکۡرُ الَّیۡلِ وَ النَّہَارِ اِذۡ تَاۡمُرُوۡنَنَاۤ اَنۡ نَّکۡفُرَ بِاللّٰہِ وَ نَجۡعَلَ لَہٗۤ اَنۡدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَۃَ لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ ؕ

काश तुम देखो इनका हाल उस वक़्त जब ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े होंगे , उस वक़्त यह एक दुसरे पर इलज़ाम धरेंगे। जो लो दुनिया में कमज़ोर और दबाकर रखे गये थे, वे बड़े बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ईमानवाले होते । वे बड़े बनने वाले इन दबे हुए लोगों को जवाब देंगे क्या हमने तुम्हें उस हिदायत से रोका था जो तुम्हारे पास आई थी ? बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम थे। वे दबे हुए लोग इन बड़े बनने वालों से कहेंगे नहीं बल्कि रात दिन की मक्कारी थी जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह से कुफ़्र करें और दूसरों को उसका बराबर ठहराएँ। आख़िरकार जब ये लोग अज़ाब देखेंगे तो अपने दिलों में पछताएँगे। (सबा 34/31-33)

मेरे भाइयों!

है याँ से ये क़ाफ़िला जाने वाला
डरो उससे जो वक़्त है आने वाला

वह नफ़सा नफ़सी का आलम होगा कि कोई किसी की ज़िम्मेदारी क़ुबूल नहीं करेगा। आज हम जिन झूठे दावेदारों की वक़ालत कर रहे हैं वह हमसे बेज़ार हो जाएँगे, हुक्म होगा:

اُحۡشُرُوا الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا وَ اَزۡوَاجَہُمۡ وَ مَا کَانُوۡا یَعۡبُدُوۡنَ ﴿ۙ۲۲﴾ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ فَاہۡدُوۡہُمۡ اِلٰی صِرَاطِ الۡجَحِیۡمِ ﴿۲۳﴾ وَ قِفُوۡہُمۡ اِنَّہُمۡ مَّسۡـُٔوۡلُوۡنَ ﴿ۙ۲۴﴾ مَا لَکُمۡ لَا تَنَاصَرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ بَلۡ ہُمُ الۡیَوۡمَ مُسۡتَسۡلِمُوۡنَ ﴿۲۶﴾ وَ اَقۡبَلَ بَعۡضُہُمۡ عَلٰی بَعۡضٍ یَّتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوۡۤا اِنَّکُمۡ کُنۡتُمۡ تَاۡتُوۡنَنَا عَنِ الۡیَمِیۡنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوۡا بَلۡ لَّمۡ تَکُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِیۡنَ ﴿ۚ۲۹﴾ وَ مَا کَانَ لَنَا عَلَیۡکُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍ ۚ بَلۡ کُنۡتُمۡ قَوۡمًا طٰغِیۡنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَیۡنَا قَوۡلُ رَبِّنَاۤ ٭ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوۡنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغۡوَیۡنٰکُمۡ اِنَّا کُنَّا غٰوِیۡنَ ﴿۳۲﴾

घेर लाओ सब ज़ालिमों और उनके साथियों और उन माबूदों को जिनको वे अल्लाह को छोड़कर बन्दगी किया करते थे, फिर उनको जहन्नम का रास्ता दिखाओ । और ज़रा इन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। क्या हो गया तुम्हें, अब क्यों एक दुसरे की मदद नहीं करते ? अरे, आज तो ये अपने आपको (और एक दुसरे को) हवाले किये दे रहे हैं! उसेक बाद ये एक दुसरे की तरफ़ मुड़ेंगे और आपस में तकरार शुरू कर देंगे। पैरवी करनेवाले अपने पेशवाओं से कहेंगे, तुम हमारे पास सीधे रुख़ से आते थे। वे जवाब देंगे, नहीं बल्कि तुम ख़ुद ही ईमान न लानेवा ले थे। हमारा तुमपर कोई ज़ोर न था , तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे , आख़िरकार हम अपने रब के उस फ़रमान के हक़दार हो गए कि हम अज़ाब का मज़ा चखनेवाले हैं । इसलिये हमने तुमको बहकाया, हम ख़ुद बहके हुए थे। (अस साफ्फ़ात 37/22-32)

यह गंदुम नुमा जौ फ़रोश (धोका देने वाले) पेशवाओं का हाल है, जो झूठी रूहानियत के ढ़ोल बजा कर लोगों को लूट लूट कर खा रहे हैं और इन फ़रमाँबरदार मुरीदों का हाल हैं जो इन पीरों व मुरशिदों की रूहानियत के गीत गाते हैं और अपनी ख़ून पसीने की कमाई बल्कि इज़्ज़त व आबरू लुटा कर भी समझते हैं कि यह मुरशिद हम पर अहसान कर रहे हैं । आयत साफ़ बता रही है कि यह लोग ख़ुद किसी ऐसे मज़हब की तलाश में थे जो इन पेशवाओं ने इनको घड़ कर दिया, यह बराबर के मुजरिम हैं।

हैरत होती है मुझे इस हज़रते इन्सान पर
कारे बद तो ख़ुद करे लानत करे शैतान पर

मगर यह तमाम उज़्र बेकार साबित होंगे

وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ
شَیْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۲۱﴾ وَ قَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ
الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ
فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ
مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾

और ये लोग जब इकठ्ठे अल्लाह के सामने बे नकाब होंगे तो उस वक़्त इन्में से जो दुनिया में कमज़ोर थे, वो उन लोगों से जो बड़े हुए थे , कहेंगे दुनिया में हम तुम्हारे मातहत थे , अब क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से हमें बचाने के लिए भी कुछ कर सकते हो? वो जवाब देंगे अगर अल्लाह ने हमें छुटकारे की कोई राह दिखाई होती तो हम ज़रूर तुम्हें भी दिखा देते । अब तो बराबर है , चाहे हम रोएँ पीटें या सब्र करें , बहरहाल हमारे बचने की कोई शक्ल नहीं। और जब फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा, सच तो ये है कि अल्लाह ने जो वादे तुमसे किये थे वो सब सच्चे थे और मैंने जितने वादे किये उनमें से कोई भी पूरा न किया। मेरा तुमपर कोई ज़ोर तो था नहीं, मैंने इसके सिवा कुछ नहीं किया कि अपने रास्ते की तरफ़ तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी दावत को क़ुबूल किया । अब मुझे बुरा भला न कहो , अपने आप ही को मलामत करो, यहाँ न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी । इससे पहले जो तुमने मुझे ख़ुदाई में साझीदार बना रखा था मैं उसकी ज़िम्मेदारी से अलग हूँ। ऐसे ज़ालिमों के लिये तो दर्दनाक सज़ा यक़ीनी है। (इब्राहीम 14/21-22)

यह तकरार जारी रहेगी मगर कोई ज़िम्मेदारी क़ुबूल नहीं करेगा और न ही अज़ाब से झूट सकेगा

وَ اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ
النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ
وَ مَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾

और जब वह आग में झगड़ेंगे , दुनिया में जो लोग कमज़ोर थे , वह बड़े बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे थे, अब क्या यहाँ तुम जहन्नम की आग की तकलीफ़ के कुछ हिस्से से हमको बचा लोगे ?व बड़े बननेवाले जवाब देंगे हम सब यहाँ एक हाल में हैं और अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चूका है।फ़िर ये जहन्नम में पड़े हुए लोग जहन्नम के कारिन्दों से कहेंगे अपने रब से दुआ करो कि हमारे अज़ाब में बस एक दिन की कमी कर दें ।वे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली खुली निशानियाँ लेकर नहीं आते रहे थे? वे कहेंगे हाँ। जहन्नम के कारिन्दे बोलेंगे, फिर तो तुम ही दुआ करो और हक़ के इन्कारियों की दुआ बेकार ही जानेवाली है। (अल मोमिन 40/47-50)

ग़ौर फ़रमाइए! मुशरिक के अन्जाम पर, ख़ुद परवरदिगार से यह हमेशा मायूस ही रहता है, दूसरों से दुआएँ करवाने की आदत वहाँ भी साथ नहीं छोड़ेगी। इसने अल्लाह को न परवरदिगार जाना और न ही इससे ख़ुद

दुआ मांगने की ज़रुरत महसूस की। वहाँ भी कहेंगे कि तुम अपने परवरदिगार से दुआ करो, यह यूँ ही दर दर की ठोकरें खाते फिरे एक दरवाज़े से मायूस हुए तो दुसरे की चौखट थाम ली और वहाँ से मुराद पूरी न हुई तो आगे चल दिए। शैतान मुशरिक पर यूँ सवार हो जाता है कि इसे शिर्क ही ऐन तौहीद दिखाई देने लगती है। न भूलिए कि अल्लाह ही सिर्फ़ एक ज़ात है जो अपने बन्दे से शर्म करता है कि उसका बन्दा जो उससे मांग रहा है खाली हाथ न लौटे। आज भी वक़्त है कि अगर आपने सारी उम्र शिर्क की गन्दगियों में काट दी तो अब भी तौबा करके वापस आ जायेंगे तो अल्लाह को आप ग़फ़ूर व रहीम पाएँगे।

रहमत ख़ुदावंदी से मायूस न हों

देखिये! अल्लाह अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमा रहा है कि मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दो:

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

(ऐ नबी) कह दो कि ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो जाओ, यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है, वो तो माफ़ करनेवाला और रहम करनेवाला है। पलट आओ अपने रब की तरफ़ और फ़रमाँबरदार बन जाओ उसके, इससे पहले कि तुमपर अज़ाब आ जाए और फिर कहीं से तुम्हे मदद न मिल सके। और पैरवी अपना लो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतरीन पहलू की, इससे पहले कि तुमपर अचानक अज़ाब आ जाए और तुमको ख़बर भी न हो। कहीं ऐसा न हो कि बाद में कोई शख़्स कहे, अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैं अल्लाह के हक़ में करता रहा, बल्कि मैं तो उल्टा मज़ाक उड़ानेवालों में शामिल था। या कहे, काश अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं भी परहेज़गारों में से होता। या अज़ाब देखकर कहे काश मुझे एक मौक़ा और मिल जाए और मैं भी नेक अमल करनेवालों में शामिल हो जाऊँ। (अज़ ज़ुमर 39/53-58)

दिल से यह ग़लत फ़हमी निकाल दें कि अल्लाह की फ़रमाँ बरदारी में आपको कोई नुक़सान होगा। क़ुरआन में अपने फ़रमाँबारदारों की दुनिया भी संवारने का वादा फ़रमाया है, लीजिये सिर्फ़ एक मिसाल देख लीजिये:

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

अगर यह बस्तियों वाले ईमान लाते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो हम इन पर आसमान व ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते लेकिन यह झुटलाते हैं और हम इनके करतूतों की वजह से इनकी गिरफ़्त करते हैं। (अल आराफ़ 7/96)

दुनिया में आज दौलत की रेल पेल के बावजूद दिल का सुकून नहीं है। इसकी वजह यह है कि इन्सानों की नाफ़रमानियों की वजह से अल्लाह ने बरकतों के दरवाज़े बन्द कर लिए। जिस काम से अल्लाह बरकत ही उठा ले उसमें सुकून कहाँ और इत्मिनान कब हो सकता है। इस फ़रमाँबरदारी के फ़ायदे आप दुनिया में भी देख लेंगे।

और क़यामत का हाल पढ़ें, जहाँ अँधेरा ही अँधेरा होगा और अपने नेक आमाल के नूर के सिवा कोई रौशनी न होगी:

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا
نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ
ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَ
ارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَاْوٰىكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ
وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾

उस दिन जबकि तुम मोमिन मर्दों और औरतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनकी दाईं तरफ़ दौड़ रहा होगा। (उनसे कहा जाएगा कि) आज ख़ुशख़बरी है तुम्हारे लिये। जन्नतें होंगी जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वो हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामयाबी है। उस दिन मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों का हाल ये होगा कि वो मोमिनों से कहेंगे ज़रा हमारी तरफ़ देखो ताकि हम तुम्हारे नूर से कुछ फ़ायदा उठाएँगे मगर उनसे कहा जाएगा पीछे हट जाओ, अपना नूर कहीं और तलाश करो फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा , उस दरवाज़े के अन्दर रहमत होगी और बाहर अज़ाब। वो मोमिनों से पुकार पुकार कर कहेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? मोमिन जवाब देंगे हाँ, मगर तुमने अपने आपको ख़ुद फ़ितने में डाला, मौक़ा परस्ती की, शक में पड़े रहे और झूटी उम्मीदों ने तुमको धोके में डाले रखा यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और आख़िर वक़्त तक वो बड़ा धोकेबाज़ तुम्हें अल्लाह के मामले में धोका देता रहा। इसलिये आज न तुमसे कोई फ़िदया क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने खुला खुला कुफ़्र किया था । तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, वही तुम्हारी ख़बरगीरी करनेवाली है और ये बदतरीन अन्जाम है । क्या ईमान लानेवालों के लिये अभी वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से पिघलें और उसके नाज़िल किये हुए हक़ के आगे झुकें और वो उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें पहले किताब दी गई थी फिर एक लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए और आज उनमें से अक्सर फ़ासिक़ (नाफ़रमान) बने हुए हैं? (अल हदीद 57/12-16)

आख़िरी गुज़ारिश

जिस क़द्र भी इख़्तिसार मुमकिन था, मैंने इख़्तिसार किया है। बात बहुत लम्बी हो जाने का ख़तरा है कि आप उकता न जायें वरना यह बातें ख़त्म होने वाली नहीं हैं । जो चीज़ क़ुरआन को पढ़ कर में समझा हूँ,

उसे आपके सामने पेश कर दिया है लेकिन हो सकता है कि किसी मक़ाम पर मैंने क़ुरआन का असल मफ़हूम समझने में ग़लती की हो, अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाए लेकिन अगर कोई मक़ाम ऐसा दिखाई दे तो आप मुझे ख़त लिख कर आगाह फ़रमा दें, लेकिन अगर मेरी बात दुरुस्त है तो आप से गुज़ारिश है कि इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे कीजिये और वह इस तरह कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक यह पैग़ाम पहुँचाएं और मेरे लिए दुआएँ ख़ैर फ़रमा दें।

आह! ऐ राज़ अयां को न समझने वाले — हल्क़ा दाम तमन्ना में उलझने वाले
हाय ग़फ़लत कि तेरी आँख है पाबन्द मजाज़ — नाज़ ज़ेबा तुझे तो है मगर करम नियाज़
तू अगर अपनी हक़ीक़त से ख़बरदार रहे — न सिया रोज़ रहे फिर न सिया कार रहे

(इक़बाल)

न मैं साहिबे इल्म हूँ और न मुझे साहिबे इल्म होने का कभी ख़याल हुआ लेकिन अच्छी बात अगर जाहिल भी कहे तो उसे भी परखना और क़ुबूल करना अक़लमन्दों का काम है।

खोल कर आँखें मरे आइना ग़फ़तार में
आने वाले दौर की धुंधली सी इक तस्वीर देख
इश्क़ को फ़रयाद लाज़िम थी तो वो तो हो चुकी
अब ज़रा दिल थाम कर फ़रयाद की तासीर देख (इक़बाल)